www.thearyasamaj.org

वेदों की ओर लौटो...!

।। ओ३म् ।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १६ अंक ११ नवम्बर २०१६

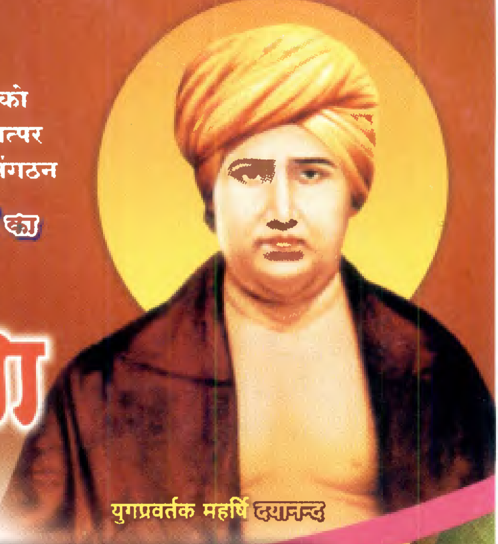

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

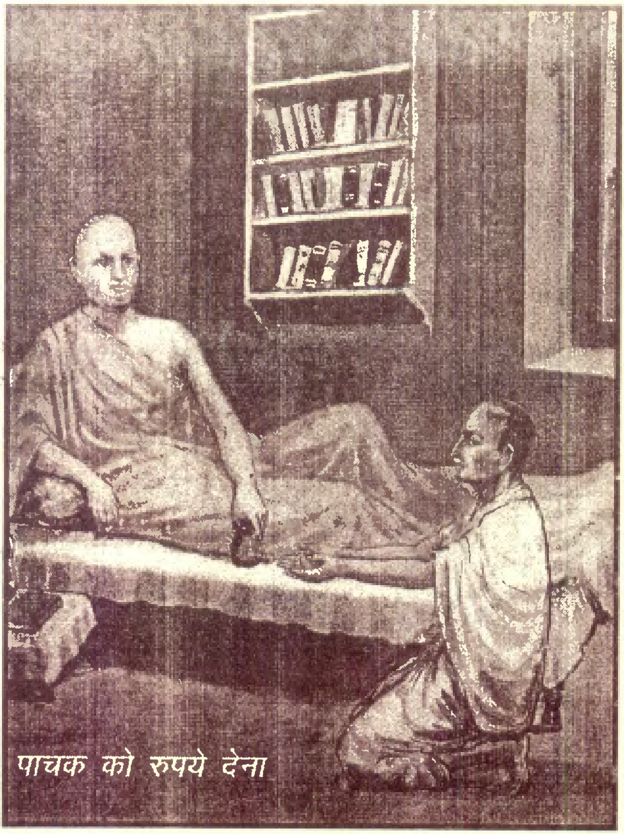

ऋषि दयानन्द की अद्भुत करूणा

विष देनेवाले रसोइये जगन्नाथ को क्षमादान ।

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र सभा की धर्माबाद (जि.नांदेड) में आयोजित त्रैमासिक बैठक में सम्मिलित सभा के पदाधिकारी एवम् अंतरंग सदस्य

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११७ | कलि संवत् ५११७ | विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १९३ | कार्तिक | नवम्बर २०१६

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५१९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - प्रा.देवदत्त तुंगार, प्रा.ओमप्रकाश होलीकर,
प्रा.सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

❋ हिन्दी विभाग ❋

१) यह कैसी दीवाली ? (संपादकीय) ४
२) ऋषि दयानन्द आज ६
३) विष पीकर तुम हो गये अमर (काव्य) ११
४) मृत्यु नहीं, यह तो बलिदान! १२
५) प्रो.धर्मवीरजी परलोक यात्रा पर १५
६) प्रान्तीय सभा के उपक्रम १८

❋ मराठी विभाग ❋

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी १९
२) मृत्युंजय पंथावरील अमर ऋषी २०
३) ऋषीतुल्य व्यक्तिमत्त्वाची शंभरीकडे वाटचाल २५
४) शोकवार्ता २९
५) वार्ताविशेष ३१

❋ प्रकाशक ❋
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

❋ मुद्रक ❋
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

www.thearyasamaj.org

संपादकीय

यह कैसी दीवाली ?

अन्धकार से प्रकाश की ओर बढने की भावना को हृदय में संजोकर हम प्रतिवर्ष दीपावली पर्व मनाते हैं। युगों-युगों से यह परम्परा अक्षुण्ण रुप से जारी है। अन्धेरे से हटकर प्रकाशमार्ग पर चलना व बुराई से बचकर अच्छाई की ओर बढना ही सही 'दीवाली' है ! संसार में जितनी भी बुराइयां हैं, वे सभी अन्धेरा है और जितनी भी अच्छाइयां हैं, वे सभी प्रकाश हैं। क्या ग्रहण करना, यह मानव के हाथ में है। जो अन्धेरें में रहेगा, वह दुःख भोगेगा और जो प्रकाश में रहेगा, वह शाश्वत सुख व आनन्द के भागी बनेगा।

दीपावली पर हम अपने भवनों पर दीये जलाकर रोशनी फैलाते हैं, किन्तु इस बाह्य प्रकाश के साथ ही आन्तरिक प्रकाश बढाने पर ध्यान नहीं देते ? वस्तुतः अन्धेरा तो हमारे अन्दर छिपा हुआ है। मनुष्य के मनरुप भवनों के कोने-कोनें में अन्धकार ने पैर जमाये है। इसी कारण आज हम परेशान हैं। काम, क्रोध, लोभ, मद-मोह, ईर्ष्या व अहंकार इन षड्‌रिपुओं ने जीवन के प्रकाशमार्ग को अवरुद्ध किया है। सरकार ने रास्तों में विद्युत स्तम्भों से रोशनी उत्पन्न तो की है, उसपर हम निर्भीकता से सफर भी करते है, किन्तु हमारी यात्रा असफल ही होती हैं। इसका कारण ही हमने ज्ञानपूर्वक संयम, करुणा, प्रेम, त्याग व समर्पण के दीप नहीं जलाये हैं। हमने अपनी आत्मा की निरंतर प्रकाशमान ज्योति को अनदेखा करने के साथ ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्यापक परमात्मा के ज्योतिपुंज को दुर्लक्षित किया है। बाहरी भौतिकता की चकाचौंध से भरी दुनिया में विचरने मात्र से प्रकाश नहीं मिलेगा। अपने व्यक्तिगत जीवन से आगे समाज व राष्ट्र के विषय में सोचने के लिए हमारे पास समय नहीं है।

हमारा समाज अंधःकार के रास्ते से गुजर रहा है। देश में साम्प्रदायिकता, जातिप्रथा, ऊंच-नीचता, भ्रष्टाचार, दुराचार, अनैतिकता, पारिवारिक कलह, धार्मिक अंधःविश्वास, धोकाधडी, देवी-देवताओं के नाम पर बढता पाखंड आदि अनेक प्रकार का अंधेरा सर्वत्र छाया हुआ है। देश पर आतंकवाद का संकट छाया हुआ है। पडोसी देश हम पर आक्रमण करने की तैयारी में है। देश की सीमा पर हमारे नौजवान प्राण हथेली पर लेकर देश की सुरक्षा में समर्पित हैं। इन सारी बातों को देखते हुए दीपावली की सार्थकता को आत्मसात करना हम सबका धर्म है। केवल बाहर की रोशनी से बजाय आंतरिक आत्मज्योति को जागृत करेंगे और वेदमार्गपर चलने का प्रयास करेंगें, तो ही हम 'दीपावली' पर्व को सही अर्थों में मनायेंगें।

\- नयनकुमार आचार्य

www.thearyasamaj.org

आरोह तमसो ज्योतिः ।
अविद्या व अज्ञान-अन्ध:कार को छुडाकर
सद्विद्या व पवित्र ज्ञान प्रकाश की ओर
ले चलने को पावन सन्देश देनेवाले

'दीपावली-प्रकाश पर्व'

के उपलक्ष्य में समस्त आर्यजनों को

हार्दिक शुभकामनाएं !

वेदज्ञान के दीप-**जलाकर** अपना जीवनदीप
बुझानेवाले वेदज्ञानसूर्य, महान् युगपुरुष

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

के १३३ वें बलिदान दिवस पर
शतशः नमन व सविनय श्रद्धांजलि !

'कीतिर्यस्य स जीवति ।'

अनेक छात्रों को वेदज्ञान का सन्देश सुनाकर उन्हें मानवता राह दिखाने वाले सब के **'गुरुजी'** तथा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख आधारवृक्ष तपःपूत पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती (हरिश्चन्द्र गुरुजी) आगामी दि.१४ नवम्बर २०१६ को अपने यशस्वी जीवन के ९८ वर्ष पूर्ण कर ९९ वे वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं। स्वामीजी के ९८ वें जन्मदिवस पर उनका असंख्य प्रिय शिष्यों प्रान्तीय आर्य प्र.सभा व समस्त जनता की ओर से

हार्दिक अभिनन्दन व शताधिक दीर्घायु की कामना!

www.thearyasamaj.org

ऋषि दयानन्द आज

- (स्व.)प्रो.डॉ.धर्मवीर

आर्यजगत् के दिवंगत मूर्धन्य विद्वान व संपादक (स्व.) डॉ.धर्मवीरजी की अजस्त्र लेखनीधारा 'परोपकारी' पाक्षिक के सम्पादकीय स्तम्भ द्वारा निरन्तर बहती रहती थी। ऋषि दयानन्द के १३३ वें बलिदान दिवस पर उनकी विलक्षणता को अभिव्यक्त करनेवाला परोपकारी के नवम्बर २०१४ अंक में प्रकाशित सम्पादकीय लेख पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। – संपादक

ऋषि दयानन्द का होना इस देश के इतिहास की अद्‌भुत घटना है। इतिहास में स्मरण उसी को रखा जाता है जो सामान्य से भिन्न है। ऐसी घटनायें बहुत होती हैं तथा उनमें तुलना करना कठिन होता है। तुलना करने का एक ही आधार हो सकता है, किस व्यक्ति के विचार और कार्य कितने महत्त्वपूर्ण और कितने समय तक प्रभावकारी हैं। महापुरुषों ने जो भी कार्य किया अपने समय में अपनी परिस्थितियों के अनुसार अपनी समस्याओं के समाधान का यत्न किया। इन लोगों के कार्य की सीमा और कार्य दृष्टि उनके समाज और वर्ग तक रही, उनके विचार भी तत्कालीन परिस्थिति में एक देश की सीमा तक बन्धे रहे हैं।

आज के संसार के इतिहास में सबसे अधिक प्रभावित करने वाले महापुरुषों में महात्मा ईसा, हजरत मुहम्मद , भगवान बुद्ध और भगवान महावीर हैं, आगे यह परम्परा लम्बी हो सकती है परन्तु विचार की अपेक्षा से कम भिन्नता है। ईसा का धर्म बढा, तो बहुत! परन्तु उसके अन्दर दूसरे के विचार को बलात् परिवर्तन की परम्परा बहुत पुरानी है। ईसाइयत के प्रचार-प्रसार के लिए किये गये प्रयत्नों में प्रलोभन और हिंसा का आश्रय लेने में कभी संकोच नहीं किया गया। आज भी सभ्यता के युग में अपने को सभ्यता का संरक्षक मानने वाला चर्च तभी तक सभ्य दीखना चाहता है, जब तक उस क्षेत्र में निर्बल है। जैसे ही समाज संख्या बल बढा लेता है, तब दूसरे विचारों का अस्तित्व समाप्त करने में कोई कमी नहीं करता। विचारों को मनवाने में हजरत मुहम्मद का कोई मुकाबला नहीं। आज इस्लाम के मानने वालों की संख्या और प्रभाव क्षेत्र संसार में बहुत व्यापक है। इस विचारधारा का जन्म ही असहिष्णुता के बीज से हुआ है। हजरत मुहम्मद ने शिष्यों को उपदेश दिया, परन्तु अपने विचारों पर प्रश्न करने का अधिकार किसी को नहीं दिया। जो

www.thearyasamaj.org

कहा और जो किया बस वही अन्तिम है। वह अपने समाज का राजा, सेनापति, न्यायाधीश तीनों हैं। आज भी इस्लाम के अनुयायी अपने को श्रेष्ठ इसलिए मानते हैं कि उनके पास तुलना करने के लिए कुछ भी नहीं है। वे किसी अन्य विचार की सत्ता ही स्वीकार नहीं करना चाहते, तुलना का प्रश्न ही कहाँ उत्पन्न होता है। इस्लाम के संस्थापक में सबसे बडी विशेषता यह है कि जिसको और लोग धर्म की आड लेकर करते हैं, मोहम्मद ने उसे ही धर्म घोषित कर दिया। दुनिया में हिंसा को अधर्म माना जाता है, परन्तु धर्म के नाम पर हिंसा की जाती है, मोहम्मद ने हिंसा को ही धर्म घोषित कर दिया, वह चाहे प्राणियों की बलि देना हो या काफिर कहकर किसी व्यक्ति का कत्ल करना हो। इस तरह मन की हिंसक प्रवृत्ति को धर्म के नाम पर खुली छूट है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात है कि संसार के सभी मत प्रवर्तक इन्द्रियों के संयम की बात करते हैं, संयम करने के उपायों को साधना में सम्मिलित करते हैं, परन्तु मोहम्मद साहब ने अधिक विवाह करने और असीमित सन्तान उत्पन्न करने की छूट ही नहीं दी, अपितु उनके आदेशों का पालन करने वालों को जन्नत में हूरों की कल्पनायें कर संसार के सुखों की वहाँ पूर्ति का प्रलोभन भी दे दिया। ऐसी परिस्थिति में मनुष्य अपने विचारों का नियन्त्रण व संयम करने की बात ही कैसे सोच सकता है। मोहम्मद की तीसरी विशेषता है, जहाँ दूसरे लोग उपासना द्वारा संसार से विरक्त होने और मोक्ष की बात करते हैं, इसलिये उपासना व्यक्तिगत रुप से एकान्त में करने की प्रेरणा देत हैं, वहाँ उपासना इस्लाम की सेना की छावनी है। नमाज से आत्मिक उन्नति तो नहीं होती, परन्तु इस्लाम की सामाजिक संरचना को बल अवश्य मिलता है। यही कारण है नमाज के नाम पर युद्धोन्माद की प्रवृत्ति देखी जाती है। जैसे सैनिक को अपनी बुद्धि से काम करने का अवसर और अधिकार नहीं होता, वैसे ही इस्लाम के अनुसायी को सोचने का अधिकार नहीं है। मोहम्मद ने ईश्वर उपासना की बात की है परन्तु मोहम्मद के बिना ईश्वर का कोई अस्तित्व नहीं, मोहम्मद की अनुमति ही ईश्वर का आदेश है। इसलिए मुसलमान उपासना में ईश्वर के साथ मोहम्मद को याद करता है और खुदा के सब जगह हाजिर-नाजिर मानने पर भी काबा की ओर मुख करना ईश्वर की उपासना समझता हैं, क्योंकि काबा मोहम्मदका जन्म स्थान है। आज संसार में इस्लाम प्रचार तलवार के बल पर ही अधिक हुआ है।

धर्म का सम्बन्ध विचारों से है। विचारों का प्रचार करके अपने अनुयायियों को सहमत करने की परम्परा भारत में ही अधिक स्वीकार्य है। पुराने समय में भगवान महावीर

www.thearyasamaj.org

और भगवान बुद्ध ने अहिंसा, दया, संयम आदि के प्रचार से मुनष्य की आन्तरिक शक्तियों को जगाने का प्रयास किया। भारत के बाहर मोहम्मद धार्मिक होकर राजा बनने में विश्वास रखते हैं, वहाँ महावीर और बुद्ध राजा होकर भी फकीर होने में विश्वास करते हैं, यही मौलिक अन्तर है। आगे चलकर इनके अनुयायियों ने भी राज सत्ता प्राप्त करके, अन्य धर्मों की भाँति बल प्रयोग से अपने विचारों को फैलाने का प्रयास किया। मौलिक रुप से संस्थापकों का विश्वास विचारों के प्रसार में रहा है, उपदेश से ह्रदय परिवर्तन कराने का ही पूरे जीवन उन्होंने प्रयास किया।

इस देश में जैन और बौद्ध विचारधारा का बहुत प्रचार और विस्तार होने पर भी यहाँ का मौलिक विचार नहीं बना। इसका कारण, इस देश की परम्पराओं और विचारों के विरोध स्वरुप इन विचारों का जन्म हुआ। इस देश की धार्मिक परम्परा आस्तिकता में विश्वास करती है। किसी धार्मिक परम्परा अस्तिकता में विश्वास करती है। किसी सत्ता के होने में उसका विश्वास है जिसका माध्यम है- वेद और ईश्वर ! जो वेद को और उसके देने वाले ईश्वर को मानता है, वह असितक है और जो इनमें से किसी एक की या दोनों की सत्ता से इन्कार करता है, उसे नास्तिक कहा गया है। किन्तु इनका मौलिक विचार नहीं है, यह प्रतिक्रिया स्वरुप उत्पन्न विचार है। इस्लाम और ईसाइयत के इस देश में आने से पहले यह वैचारिक संघर्ष इस देश में प्रारम्भ हो गया था। सत्ता के द्वारा किसी विचार के पोषण होने पर भी सामान्य जनता में इनकी स्वीकार्यता और अस्वीकार्यता प्रचार पर ही आधारित थी। सत्ता के कारण एक समय ऐसा आया, जब इस देश से परम्परागत धर्म की मान्यता क्षीणप्राय हो गई। उस समय सत्ता के मुकाबले सन्तों ने संघर्ष किया। जहाँ युद्ध और शस्त्र से जय-पराजय होती थी, वहाँ आचार्य शंकर ने शास्त्रार्थों से जय-पराजय का निश्चय कराया, उनके प्रचार का इतना प्रभाव हुआ कि इस देश में बौद्ध और जैन मतों का प्रभाव हुआ कि इस देश में बौद्ध और जैन मतों का पराभव हुआ और ब्राह्मण धर्म की फिर से स्थापना हुई। जब ब्राह्मण धर्म की आचार्य शंकर ने फिर से स्थापना कर दी और लम्बे समय तक उसका वर्चस्व बना रहा, फिर भी इस देश में विचारधारा के पतन के साथ राज सत्ता का भी पतन होने लगा, तब इस समाज में जो ब्राह्मण धर्म, जैन और बौद्धों को पराजित कर अपना वर्चस्व स्थापित कर चुका था। वही धर्म इसी देश मे ईसाइयत और इस्लाम के आने से पराजित होने लगा। वेदानुयायियों में आत्महीनता घर करने लगी, दिन-प्रतिदिन इनके वर्चस्व के साथ इनकी संख्या भी घटने लगी। विदेशी सत्ता में, मुसलमानों ने

www.thearyasamaj.org

इस्लाम का और अंग्रेजों ने इस देश में ईसाइयत का प्रचार किया। तब इस देश के समाज में जो संकट खडा हुआ । वह केवल राजनैतिक पराधीनता का नहीं था, अपितु धार्मिक दासता का भी था। जो लोग मुसलमान हो गये थे, वे इस्लामी शासक को विदेशी होने पर भी अपना मानते थे। अपने साथ रहने वाली इस्लामेतर प्रजा को विधर्मी व काफिर कहकर अपना शत्रु समझते थे । यही स्थिति ईसाई लोगों की थी, वे ईसाई बनकर अपने को अंग्रेजों का छोटा भाई कहते थे, तो हिन्दुओं के प्रति उनके मन में घृणा और परायापन बढ रहा था । ऐसी परिस्थिति में इस देश को धार्मिक और राजनीतिक दोनों ही सत्ताओं ने पराया बना दिया था । अज्ञानग्रस्त जनता और स्वार्थ और पाखण्ड में लिप्त धर्माचार्य न तो इस देश के धर्म को बचाने में समर्थ थे, न विदेशी सत्ता का प्रतिकार करने का विचार ही उनके मन में था ।

देश और समाज किंकर्त्तव्यविमूढ बना हुआ नियति समझकर इस दासता की परिस्थितियों को स्वीकार कर बैठा था, ऐसे समय पर ऋषि दयानन्द का इस इस देश देश की धरा पर अवतरण हुआ । ऋषि दयानन्द को कार्यक्षेत्र में उतरते ही यह समझने में देर नहीं लगी कि इस देश के पतन का कारण क्या है ? देश के आन्तरिक और बाह्य शत्रु कौन है ? भारत की पराधीनता के समय में जितने भी समाज सुधारक, विचारक, धार्मिक नेता, साधु-सन्त हुए हैं, उनमें ऋषि दयानन्द की विलक्षणता इस बात में है कि इस देश की राजनैतिक और धार्मिक दासता से समान रुप से इस देश की जनता को मुक्त कराना। इसके लिए उन्होंने जो मार्ग चुना वह न तो शंकराचार्य का ब्राह्मण धर्म था, न बौद्ध और जैन का ब्राह्मण विरोधी नास्तिकवाद, न ही विदेशी राजसत्ता से पालित पोषित ईसाइयत या इस्लाम ही उनके आदर्श थे । सबसे पहले उन्होंने इस देश की आधारभूत विचारधारा के जनक वेद, शास्त्र एवं वैदिक साहित्य का स्वयं गहरा अध्ययन किया और ब्राह्मणवाद के रुप में झूठ,पाखण्ड, जो स्वार्थ की पूर्त्ति के लिये ब्राह्मणों ने वेद पर थोपा था, उससे ऋषि दयानन्द ने वेदों को मुक्त कराया, वेदों के वास्तविक अर्थ और प्रयोजन को जनता और धर्माचार्यों, विद्वानों के सामने रखा । ब्राह्मणों द्वारा वेद पढने पर लगाये गये प्रतिबन्ध को ऋषि दयानन्द ने वेदों को मानव मात्र के लिए ग्राह्य और स्वीकार्य बना दिया । इस तरह इस देश की आत्मा का प्रकाश ऋषि दयानन्द ने किया । इस देश में ऋषि दयानन्द के आसपास जितने वेद-समर्थक या वेद-विरोधी थे उनका दुर्भाग्य यह था कि वे स्वयं वेद पढने के स्थान पर दूसरों के तर्कों, विचारों को आधार बनाकर वेद का समर्थन या विरोध करते थे, परन्तु ऋषि दयानन्द ने

www.thearyasamaj.org

स्वयं वेदों का अध्ययन कर वेद समर्थकों के और विरोधियों के उन विचारों का तर्क और वेद के प्रमाणों से विरोध कर के वेद की सत्यता को प्रतिष्ठित किया। यही उनका विचार इस देश की सभ्यता संस्कृति को बचाने का और देश के गौरवपूर्ण इतिहास को प्रकाशित करने का आधार बना ।

जब एक बार वेद के यथार्थ सत्य विचार ऋषि दयानन्द को प्राप्त हो गये, तब उन्हें न पाखण्डी, स्वार्थी वेद समर्थकों से शास्त्रार्थ करने में कठिनाई हुई, न वेद विरोधी जैन, बौद्ध, ईसाइयत और इस्लाम की गलत परम्पराओं, मान्यताओं, सिद्धान्तों पर आक्रमण करने में संकोच ही हुआ। ऋषि दयानन्द को किसी राजसत्ता से कभी भय नहीं लगा। उन्होंने सदा सत्य को स्वीकार किया और सत्य के ग्रहण करने के लिए सबको प्रेरित किया। वेद और ईश्वर दोनों के सत्य, वास्तविक स्वरुप को प्रकाशित करने में जीवनभर प्रयत्नशील रहे । माता-पिता के समान सुख देने वाली विदेशी सत्ता की तुलना में कम अच्छे स्वराज्य को सर्वोपरि बताया। धार्मिक अन्धविश्वास और पाखण्ड का वह चाहे अपनों का हो या दूसरों का! उसके खण्डन करने में तनिक भी देर नहीं लगाई । ऋषि दयानन्द को सभी साधकों, सन्तों, विचारकों से पृथक् करनेवाली बात है, वे मनुष्य मात्र को ज्ञान, शिक्षा, सत्कर्मों का अधिकार देते हैं । इतना ही नहीं वे अपने अनुयायियों को कुछ भी बिना परीक्षा किये स्वीकार न करने का आदेश देते हैं । यह वह अधिकार है जो अधिकार कोई गुरु अपने शिष्यों को देने के लिए तैयार नहीं होता । ऋषि दयानन्द की इस वैचारिक क्रान्ति का दिग्नदर्शन हमें उनकी अमरकृति **'सत्यार्थप्रकाश'** में होता है । अब तक धार्मिकता के नाम पर सबका आदर करने, सबके साथ समभाव रखने का पाठ पढाया जाता था, परन्तु ऋषि ने सभी मत-पन्थों का अध्ययन किया और उनके मिथ्या आडम्बर और गलत सिद्धान्तों की बखिया उधेड कर रख दी । विदेशी धर्मों की सिद्धान्त विरुद्ध बातों और पाखण्डों का भी उसी प्रकार निराकरण किया। परिणामस्वरुप आज तक भी वह तिलमिलाहट समाप्त नहीं हुई । आज भी ऋषि के सिद्धान्तों का अनुसरण करते हुए भारतीयों को नये मत-सम्प्रदायों का भी अध्ययन कर उनका खण्डन करने की उतनी ही आवश्यकता आज है जितनी ऋषि दयानन्द के समय थी । इस्लाम और ईसाइयत का जिस तरह से आक्रमण हो रहा है, उनके षडयन्त्रों का अध्ययन कर एक बार फिर सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें और चौदहवें समुल्लास को लिखने और पढने की आवश्यकता है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के रुप में एक शैली प्रदान की है, जो वेदों के यथार्थ स्वरुप को प्रकाशित करने के लिए प्रेरित करती है और अन्तिम

चार समुल्लासों के रुप में दुनिया के हर पाखण्ड का विरोध करने का बल प्रदान करती है । जितने प्रासंगिक ऋषि दयानन्द तब थे, उतने ही प्रासंगिक आज भी हैं । लोकनाथ तर्क वाचस्पति के शब्दों में-

हे नाथ सो दूर है, जो लोक संघी डटे ।।
दौडाय लेंगे कभी, स्वामी दयानन्द की।

***

साभार-परोपकारी पाक्षिक-
नवम्बर(प्रथम)-२०१४

एक प्रसिद्ध रचना

विष पीकर तुम हो गए अमर !

पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि'

हे देव दया के महा मनुज,
विष पीकर तुम हो गए अमर ।।धृ।।

तुम ज्ञान-पताका ले कर में
धरती पर जब उतरे ऋषिवर
तम फटा, बिखर आलोक गया
वैदिक वाणी के पाकर स्वर
तुमने सच्चा शंकर ढूंढा
यौवर के 'शंकर' को खोकर !
हे देव...।।१।।

हे नव समाज के दिव्य जनक
युग-पुरुष लोक के निर्माता
पाकर तुमको यह देश जगा
हो गई धन्य धरती-माता
तुमने जो भी पथ दिखलाया
चल पडे करोडों पग उस पर !
हे देव...।।२।।

तुम चले जिधर बढ चले अभय
जंगल बीहड या नद-नाले
हिम शैल रोकते थे पग-पग
थे भालू-सिंह घेरा डाले
कंकर-कंकर पर कांटे या
खाने को मिलते थे पत्थर !
हे देव...।।३।।

हम नाम तुम्हारा लेकर अब
अपना ही नाम कमाते हैं
हम बात तुम्हारी करते हैं
पर तुम्हें भूलते जाते हैं
हम रोज तुम्हें विष देते हैं
दलबन्दी का 'अमृत' पीकर !
हे देव...।।४।।

महर्षे, तुम्हारे घर में अब
नफरत की आग धधकती है
तेरे समाज के नियमों की
घर-घर में होली जलती है,
हो गया विवेक यहां अन्धा
दो ज्ञान इन्हें फिर से आकर !
हे देव...।।५।।

***

(कवि हिंदी साहित्य जगत के लब्धप्रतिष्ठ कवि हैं।)

www.thearyasamaj.org

डॉ.धर्मवीरजी को कृतज्ञतापूर्वक श्रद्धांजलि !

मृत्यु नहीं, यह तो बलिदान !

- डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थी

ऋषिवर दयानन्द के सच्चे अनुयायी डॉ.धर्मवीरजी का अचानक हमसे बिछुड जाना, यह हम सबके लिए एक जबरदस्त झटका है। इससे आर्य जगत् की कितनी अपूरणीय क्षति हुई है, इसका हम अन्दाज लगा नहीं सकते । आज के जमाने में उन जैसा वैदिक सिद्धान्तों का प्रखर तत्वनिष्ठ विद्वान कोई नहीं था । निर्भीक वेदप्रचारक, प्रखर दार्शनिक तत्त्ववेत्ता व हर विषय पर तार्किकता से जवाब देनेवाले प्रबुद्ध विद्वान् आदि विशेषणों से अलंकृत एक दिव्य व्यक्तित्त्व का चले जाना मानों आर्य समाज को अन्ध:कार की ओर ले जाना है । अनोखी लगन के साथ वे ऋषि मिशन को पूरा करने में अहर्निश लगे रहें । डंके की चोट के साथ अवैदिक मतों का खण्डन वे अपनी ओजस्वी वाणी व प्रभावी लेखनी से निरन्तर करते रहें ।

पं.लेखराम व पं.गुरुदत्त की भाँति वे फकीर बनकर ऋषि के सपनों को साकार करने में संलग्न हुए । न घर परिवार की चिन्ता की, न अपने स्वास्थ्य की ! इस तरह की धून उनमें बचपन से ही संवार थी । जब से गुरुकुल पढने गये, तब से उनका मन कभी शान्त नहीं बैठा ! छात्रावस्था से आज तक कभी वे अपने माता-पिता व रिश्तेदारों से मिलने तक नहीं आये । उनका यह व्यवहार कुछ लोगों को कटुतापूर्ण भले ही लगा हो, किन्तु इसमें ऋषिकार्य की लगन समाई थी। श्री धर्मवीरजी महाराष्ट्र के भूमिपुत्र रहें । उनके पिता स्व.श्री.पं.भीमसेनजी कट्टर वैदिक धर्मी, महान् राष्ट्रभक्त व प्रबल सत्यानुग्राही थे । हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम में उन्होंने भाग लिया था । जेल की सजा भी उन्हें भोगनी पडी थी । कर्मठ वेदपण्डित होने के साथ ही वे आशुकवि भी थे । ऐसे कर्मठ पिता की धर्मवीरजी एक अतिकर्मठ सन्तान थे। **"अनुव्रत पितु: पुत्रो..।"** इस वेदवाक्यानुसार सच्चे अर्थों में प्रा.धर्मवीरजी न आजीवन अपने पिता के विचारों पर चलते रहें । पिताजी की भाँति उन्होंने कभी भी असत्य के साथ समझौता नहीं किया । स्वयं के लिए व अपने परिवार के लिए कभी किसी से सिफारिशें नहीं की । एक ऐसा पुत्र जिसने अपने पिता के व्रतों व विचारों को अन्त तक निभाया, मानों सही अर्थों में यह माता-पिता के गौरव को बढाना है ।

www.thearyasamaj.org

डॉ.धर्मवीरजी चहुंमुखी प्रतिभा के धनी थे । कृतिशील विद्वान् व लेखक होने के साथ ही पारदर्शी पद-अधिकारी थे । महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा के लिए उनका समर्पण ऐतिहासिक सिद्ध होता है । उनकी गतिमानता व अपूर्व नि:स्पृहता के फलस्वरुप इस संगठन का प्रमुख पद इनकी ओर स्वयमेव चलते आया । इतिहास साक्षी है कि पू.स्वामी ओमानन्दजी के इस महान् शिष्य ने अपने अप्रतिम कर्तृत्व से महर्षि दयानन्द की इस उत्तराधिकारिणी सभा को यशोशिखर पर पहुंचाया। इस सभा अस्तित्व, उसकी गरिमा व प्रतिष्ठा को बढाकर समग्र विश्व में उसकी आदर्श प्रतिमा को उज्ज्वल बनाने में किसी व्यक्ति ने सर्वस्व न्योछावर किया तो, वे थे-'**धर्मवीरजी**।' किसी नीतिकार के कथनानुसार '**कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्** ।' अर्थात् जब तक निश्चित कार्य सिद्ध न हो जाय, तब तक विश्राम नहीं ! एक तो कार्यपूर्ति होगी या तो देहपतन!' ऋषि के विचारों को प्रसारित करने की उद्देश्य की पूर्ति में उन्होंने अपने स्वास्थ्य की ओर पूरी तरह से अनदेखा किया। अपनी शारीरिक पीडा के विषय में न कभी किसीको अपने स्वास्थ्य के विषय में बताया, न कभी चर्चा की ? भोजन में भी जो मिला, जैसा मिला... उसे आनंदेन ग्रहण किया !

महाराष्ट्र की प्रतिनिधि सभा व आर्य समाजों के निमन्त्रण पर वे सदैव अपने पैत्रिक प्रान्त महाराष्ट्र में आते रहें । यहां के भोजन, निवास, दान-दक्षिणा, सामान्य सेवा-सम्मान आदि को वे सहजता से स्वीकारते रहें । स्वास्थ्य को संभालने के विषय पर मैंने उन्हें कई बार कहा ! अभी अमेरिका से आने बाद भी मेरी उनसे इस विषय पर बातचित हुई थी । घूमना-फिरना कम करने के लिए मैंने उनसे आग्रह किया था, किन्तु वेदप्रचार व सभा की गतिविधियों को बढाने की उनकी धून ने उन्हें कभी चैन से बैठने नहीं दिया । आखिर जो होना सो हो ही गया । वस्तुत: उनकी यह मृत्यु नहीं, बल्कि बलिदान है । वेद प्रचार के कार्य में सर्वतोमना संलग्न धर्मवीरजी का यह बलिदान अनेकों ऋषिभक्तों की बलिदानी परम्परा को जीवित रखनेवाला है । उनका अकस्माद् निधन हमारे लिए बहुत नहीं वेदनादायक भले ही रहा हो, किन्तु इससे आनेवाला कल और अधिक सुगठित होगा । धर्मवीरजी का प्रेरक जीवन युगों-युगों तक देश के आर्यवीरों, विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं को सक्षम बनायेंगा ! परोपकारिणी सभा के पदाधिकारी व सदस्य और ऋषि उद्यान के आचार्यवृन्द व ब्रह्मचारी गण तथा आर्य जगत् के सभी सच्चे क्रियाशील महानुभाव डॉ.धर्मवीरजी की दिव्यतमा जीवनज्योति सम्मुख रखकर सदैव

www.thearyasamaj.org

आगे बढते रहेंगें !

मेरा स्वास्थ्य बीच में ही बिगड जाने से मैं अजमेर पहुंचकर प्रियवर प्रो.धर्मवीरजी के अन्तिम दर्शन कर न सका और न ही श्रद्धान्जलि सभा में सम्मिलित हो सका, इसका मुझे भारी खेद है । परोपकारिणी सभा का सदस्य होने के नाते से मैं हमारे कर्मयोगी प्रधान व वेदज्ञानी, धर्मधुरन्धर ऋषिभक्त को अभिवादन करते हुए सविनय श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ । पतिधर्मपरायणा श्रीमति ज्योत्स्ना बेटी व उनकी तीनों कन्याओं व दामाद तथा समस्त परिवार के प्रति हमारी हार्दिक शोकसंवेदनाएं!

(लेखक परोपकारिणी सभा के सदस्य एवं महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा के प्रधान हैं।)

– आर्य समाज, परली–वैजनाथ

जि.बीड – मो.९४२११९५१९०४

***

सन्तोष आर्य सभा के शुद्धिसंस्कार प्रमुख

आर्य समाज जालना के पुरोहित एवं कार्यकर्ता श्री सन्तोषजी आर्य को महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का शुद्धि संस्कार प्रमुख बनाया गया है। धर्माबाद में दि.२८ अगस्त को सभा की सम्पन्न हुई त्रैवार्षिक बैठक में सर्वानुमति से यह नियुक्ति की गयी । श्री आर्य ने आज तक बडे साहस के साथ अनेकों युवकों व युवतियों के शुद्धि संस्कार कर उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित किया और उनके अन्तर्जातीय व अन्तर्पन्थीय विवाह करवाये हैं । इस प्रशंसनीय कार्य को देखते हुए श्री सन्तोषजी पर शुद्धि संस्कार के प्रमुख पद का भार सभा ने सौंपा है । इस उपलक्ष्य में सभा के पदाधिकारियों ने उनका अभिनन्दन कर शुभकामनाएं दी । जालना के जिलाधीश कार्यालय में आयोजित एक समारोह में राज्य के जल आपूर्ति एवं स्वच्छता मन्त्री श्री बबनरावजी लोणीकर के करकमलों से श्री सन्तोष आर्य का अभिनन्दन किया। इस अवसर पर जिलाधीश श्री जोन्धले, नगराध्यक्षा श्रीमती पार्वतीबाई रत्नपारखे तथा आर्य समाज के सदस्य उपस्थित थे ।

<u>सुभाषित</u> - संसार का आश्चर्य

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती, रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देहम् ।
आयु: परिस्त्रवति भिन्नघटादिवाम्भो,लोकस्तथाप्यहितमाचरतीति चित्रम् ।।

अर्थ – शेरनी के समान भयभीत करनेवाला बुढापा सामने खडा है, अनेक प्रकार के रोग शत्रुओं के समान शरीर पर आक्रमण कर रहे हैं और फूटे हुए घडे में से जैसे निरन्तर पानी रिसता रहता है, वैसे ही आयु क्षीण होती जा रही है, अहो ! कितने आश्चर्य की बात है कि लोग फिर भी पाप कर्मों में लगे हुए हैं !

www.thearyasamaj.org

प्रो.धर्मवीरजी परलोक यात्रा पर

– माधव के.देशपाण्डे

संसार एक गतिशील प्रवाह है। इसमें कुछ ऐसी दुर्घनाएं घटती है, जिससे समग्र मानव जाति को दुःख उठाना पडे, तो वे निश्चय ही हानिकारक सिद्ध होती है। जिनके जीवनपुष्प से आनेवाला कल सुगन्धित होनेवाला हो, वही अकस्मात मुरझाए, तो फिर क्या कहें ? डॉ.धर्मवीर जैसे सरस्वतीपुत्र का अचानक चले जाना हम सबके लिए जहां अत्यंत दुःखप्रद है, वहीं आर्यजाति के लिए बहुत ही हानिप्रद भी। किसी ने कभी सोचा ही नहीं था कि, ६ अक्टूबर की प्रभातवेला शोकवेला में रुपान्तरित होगी और हम सब दुःखसागर में डुबेंगे ? लेकिन सृष्टिचक्र की अनिवार्यता को स्वीकार करने के सिवाय कोई पर्याय नहीं बचता। डॉ.धर्मवीरजी के निधन वार्ता की पुष्टि होने पर हमने पुणे से अजमेर की ओर प्रस्थान करने का निश्चय किया। हम पति-पत्नी और सभा के उपमन्त्री श्री लखमसीभाई वेलानी अजमेर निकले तथा मुम्बई से मेरी कन्या सौ.पल्लवी आमटे भी चल पडी। जयपूर होते हुए हम अजमेर पहुंचे। प्राय: चहल-पहल व अतिथि-विद्वानों के आवागमन के वातावरण से पूरित ऋषि उद्यान में आज एकदम सन्नाटा छाया हुआ था। सूर्य के उदित होन से पूर्व ही वेदज्ञान का सूर्य अस्त होता देख सभी उद्यानवासी दिन में भी अन्धेरापन महसूस कर रहे थे।

हम सभी दु:खी अन्त:करण से सरस्वती भवन पहुँचे, जहाँ पर डॉ.धर्मवीरजी का पार्थिव सुरक्षित शवपेटिका में रखा था। देखते ही देखते हम सबकी आँखो से अश्रुधाराएं बहने लगी। गत २५/३० वर्षों से जिस ऋषि उद्यान से वे अभिन्न बन गए थे, जिस ऋषि की विचारधारा का असिधारा व्रत जिसने अंगिकारा था, वह हंस अकेला ही उड गया। चित्त मन सुन्न हो गया। आँखे तो पार्थिव शरीर को देख रही थी, किन्तु वह कहाँ चले गए? ईश्वर की व्यवस्था क्या है यह हम नहीं जानते। किन्तु मृत्यु यह अनिवार्य घटना है, असाधारण है।

सायंकाल तक ऋषि उद्यान विद्वानों के आगमन पुनः भरने लगा। जिसे भी जहाँ भी संदेश मिला और जो भी सुविधा उपलब्ध हुई, वह अजमेर के लिए निकल पडा। केरल से कोई आया, आसाम से कोई आया, नेपाल से कोई आया अपने सर्व मान्य विद्वान, सिद्धान्त के दृढ, दयानंद के प्रेमी को अंतिम विदाई देने अजमेर पहुंचा। ऋषि उद्यान के मान्यवरों ने

सबके निवास की मूक वाणी से व्यवस्था की। अंतिम यात्रा, दूसरे दिन दिनांक ७ अक्टूबर को प्रात: दस बजे प्रारम्भ हुई । ऋषि उद्यान से स्मशानभूमि, मलूसर, जहाँ महर्षि दयानंद का अग्निसंस्कार किया गया था, करीब ६ कि.मी. की दूरी पर है। वहां पहुंचने के लिए वाहनों व बसों की व्यवस्था की गई थी । अंतिम यात्रा परोपकारिणी सभा के कार्यालय केसर गंज पहुंची । वहां से कुछ क्षणों के लिए डॉ.धर्मवीरजी पहले जहाँ रहते थे, वहां पहुंची । 'जय घोष, अमर रहे' के नारों और ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के मंत्रों की आवाज गूंजती थी । अंन्तिम यात्रा में स्थान-स्थान पर पुष्पवर्षा होती थी । करीब ४-५ हजार की संख्या से अधिक लोग इकट्ठा हुए थे । प्रात: ११.३० बारा बजे तक यात्रा स्मशान भूमि पहुंची, जहाँ पर वैदिक मतानुसार अंतिम संस्कार की व्यवस्था की गई थी। घी, सुगंधीयुक्त औषधी की सामग्री एवं चंदन की समिधाओं की व्यवस्था तैयार थी । संस्कार विधि के अनुसार पार्थिव शरीर का अग्निसंस्कार वेदमंत्रों के साथ प्रारम्भ हुआ। अनेकोंने आर्द्र नयनों से बिदाई दी ।

डॉ.धर्मवीरजी नामक जीवात्मा की जीवनयात्रा ऐतिहासिक रही है । इस आत्मा ने कहाँ जन्म लिया था? किशोर अवस्था कहाँ पली? क्या किसी को पता था कि ये बडे होकर क्या बनेंगें ? जब गुरुकुल की शिक्षा के लिए निकल पडे, पढने लगे, तो शायद उनके गुरुओं व उनके सहपाठियों को इसका अंदाज धीरे-धीरे आने लगा होगा । ये म.दयानंद के दीवाने, वेदों का अध्ययन करनेवाले अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से सारी विद्या समेट रहे थे। अपने पुरुषार्थ से धीरे-धीरे आगे बढ रहे थे । नियति के अनुकुल अजयमेरु की पावन धरती में प्रवेश पाया। अध्यापन के साथ ही वे परोपकारी के माध्यम से लेखन व सम्पादन कार्य में संलग्न हो गये। परोपकारिणी सभा के सदस्य, पुस्तकाध्यक्ष, संयुक्त मंत्री, मंत्री, कार्यकारी प्रधान व अब प्रधान बनकर उन्होंने इसे प्रगति के परमोच्च शिखरपर पहुंचाया ।

अपनी कथनी और करनी का उच्च आदर्श संसार के समक्ष रखनेवाले आदरणीय डॉ.धर्मवीरजी ने सन २००८ में आयोजित १२५ वे महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह के श्रद्धांजली सम्मेलन में कहा था-''सवा सौ साल से लेकर अब तक इस परोपकारिणी सभा के पदाधिकारियों की स्मृतियों के सम्मुख मैं श्रद्धा से अपना मस्तक झुकाता हूँ, क्योंकि उन सब की त्याग व तपस्या के कारण ही महर्षि की यह पवित्र धरोहर सुरक्षित और संरक्षित रही है । स्वामी रामदेव की उपस्थिति में हम वचन देते हैं कि इसकी सुरक्षा में एक क्षण और एक कण की भी दुर्बलता हम आने नही देंगें ।''

हम सबने यह देखा है कि परोपकारिणी

www.thearyasamaj.org

सभा को धर्मवीर जी अपने कुशल नेतृत्व में कितना उज्ज्वल, कितना कीर्तिमान्, यशस्वी और सशक्त बना दिया है । आर्य समाज, परोपकारिणी सभा तथा समग्र मानव जाति का कितना नुकसान हुआ? यह अनुमान नहीं लगा सकते । डॉ.धर्मवीरजी की अकस्माद् मृत्यु से हमने बहुत कुछ खोया है । वे उच्च कोटि के विद्वान व वेदों के प्रवक्ता थे। वाणी की देवता सरस्वती उनके जिह्वा पर थी, उन्हें सूक्ष्म ज्ञान कंठस्थ था, अनेकों विद्वानों में उनकी गणना थी, इसे तो विद्वान ही जान पाऐंगें । लेखनी के विषय में तो क्या कहना ? पंडित लेखराम जी और पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय की शृंखला को धर्मवीरजी ने पूरा किया था । उन्होंने आजीवन परोपकारिणी सभा का सेवाकार्य अवैतनिक रुप से निभाया । निःस्वार्थ सेवा, वह भी आजीवन! क्या आसान है ? एक दिन वे पुणे के वार्षिक उत्सव पर पधारे थे। तब हम पुरन्दर कीले को देखने चले गए। लौटते समय एक जगह किसी काम के लिए रुके थे, तो धर्मवीरजी गाडी से उतर कर पैदल चलने लगे । रास्ते में एक भिखारी मिला। उसने भीख माँगने पर वे कहने लगे, 'भीख तो नहीं दूंगा।' भिखारीने ने कहा, 'कुछ खिला दो।' उन्होंने पूछा 'चावल खाओगे?' भिखारी बोला- 'हाँ !' तो वे दुकान पर चले और ५ किलो चावल लाकर उन्होंने उस भिखारी को दिये। उसे जिंदगी में ऐसी भीक कभी नहीं मिली होगी । वे ऐसे उदार दानी भी थे । डॉ.धर्मवीरजी हर परिस्थिति में शान्त और आनन्दी रहते थे । उनके दिल में सत्य, नम्रता, सरलता, सेवाभाव, सच्चाई, सहनशक्ति, धैर्य, क्षमा, दया आदि गुण सदैव झलकते थे।

जिस रास्ते से वे चल पडते थे, वहीं पर वे अपने विचारचिन्ह स्थायी रुप से छोड चले जाते थे । पिछले वर्ष ही मेरी पुत्री सौ.पल्लवी के आमन्त्रण पर वे पनवेल-मुंबई पधारे। वहाँ आयोजित पारिवारिक सत्संगों में उन्होंने अपने विचारों व व्यक्तित्व की जो छाप छोडी, वह श्रोताओं के लिए बहुत ही प्रेरणाप्रद सिद्ध हुई । देश हो या विदेश, अनेकों स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों के लिए वे अविश्रान्त गति से वहाँ पर पहुँचते रहे। हर जगह ऋषि का वेद संदेश देने में सर्वतोमना समर्पित इस वेद ज्ञान पुरुष को हमारी हार्दिक भावभीनी श्रद्धान्जलि ! पथिक जी की निम्नलिखित पंक्तियाँ उध्दृत करते हुए मैं उन्हें अभिवादन करता हूँ -

दिन में जिसे चैन न था, न रात को आराम था।
दिल में एक दर्द लिए, फिरता सुबह शाम था ।
'पथिक' अपनी जान दे के जान हम में डाल गया।
उसका कसम से 'धर्मवीर' नाम था।

- साई अव्हेन्यु, पिंपळे सौदागर,
पुणे /मो.९८२२२९५५४५

* * *

www.thearyasamaj.org

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेदों की ओर लौटो !

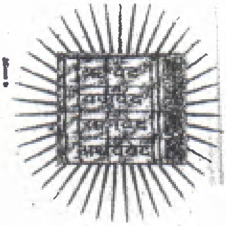

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव–'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

www.thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश

उपासनेचे फळ

समाधिनिर्धूत मलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत्सुखं भवेत् ।
न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयन्तदन्तः करणेन गृह्यते।।

(मैत्रायणि उपनिषद् ४/४/९)

समाधीच्या योगाने ज्या पुरुषाचे अविद्यादी मळ नष्ट झाले आहेत, ज्याने आत्मस्थ होऊन परमात्म्यामध्ये आपले चित्त केंद्रित केले आहे, त्याला परमात्म्याशी मीलनाचे जे सुख प्राप्त होते, त्याचे वर्णन वाणीने करता येत नाही. कारण जीवात्मा आपल्या अंतःकरणाने त्या आनंदाचे ग्रहण करतो.

दयानंद वाणी

पुरुषार्थी माणसाचा सहाय्यक ईश्वर!

पाहा ! सृष्टीमध्ये जितके प्राणी अथवा अप्राणी आहेत, ते सर्व आपापली कामे व प्रयत्न करीतच असतात. मुंग्या वगैरे प्राणी सतत धडपड करीत असतात. पृथ्वी वगैरे सदैव फिरत असतात. वृक्ष वगैरे सदा वाढत व घटत असतात. या गोष्टींवरुन माणसानेही धडा घेतला पाहिजे. जो माणूस पुरुषार्थ करतो, त्याला इतर लोक साह्य करीत असतात. त्याचप्रमाणे धर्मयुक्त पुरुषार्थ करणाऱ्याला ईश्वरही मदत करतो. कोणाला नोकर ठेवावयाचा असेल, तर तो काम करणाऱ्याला नेमतो. आळशाला कोणी जवळ करीत नाही. डोळे असणारा व पाहण्याची इच्छा बाळगणारा असतो, त्यालाच दिसते. आंधळ्याला दिसत नाही.

याचप्रमाणे परमेश्वरही परोपकाराच्या कृत्यात प्रार्थना करणाऱ्याला साह्य करतो. हानिकारक कृत्यामध्ये तो सहाय्यक बनत नाही. 'गूळ गोड' असा जप करीत बसणाऱ्याला गूळ मिळत नाही किंवा त्याचा स्वादही कळत नाही. परंतु गुळाच्या प्राप्तीसाठी जो धडपड करतो, त्याला लवकर किंवा उशीरा गूळ अवश्य मिळतोच.

(सत्यार्थप्रकाश–७ वा समुल्लास)

www.thearyasamaj.org

म.दयानंद बलिदान दिनानिमित्त-

मृत्युंजय पंथावरील अमर ऋषी

– पं.रमेश ठाकूर(गुंजोटीकर)

३० ऑक्टोबर १८८३, दिवाळीची अमावस्या ! सर्वत्र दिव्यांची रोषणाई होती. स्वामी दयानंदांनी न्हाव्यास बोलावून क्षौर करवून घेतले. ओल्या कपड्यांनी अंग पुसून घेण्यात आले. स्वामीजींनी आपल्या आवडीचे भोजन तयार करण्यास सांगितले. तयार भोजन थाळीत मांडून स्वामीजींसमोर ठेवण्यात आले. स्वामीजींनी त्या थाळीवर एक दृष्टी टाकली आणि ती थाळी तेथून घेऊन जाण्यास सांगितले, परंतू भक्तांच्या आग्रहामुळे एक चमचाभर चण्याचा रस तेवढा तोंडात घेतला आणि इतरांना जेवून घेण्यास सांगितले.

संध्याकाळचे चार वाजले होते. स्वामीजींनी आपले शिष्य आत्मानंद यांना जवळ बोलावून घेतले. त्यांच्या डोक्यावरुन हात फिरवून आशीर्वाद दिला. ''आनंदात राहा !'' पं.भीमसेन व स्वामी आत्मानंद यांना एकेक शाल व दोनशे रुपये देण्यास जवळच्या मंडळींना सांगितले. त्यानंतर परगावहून आलेली मंडळी भेटावयास आली. स्वामीजींच्या चेहऱ्यावर कमालीची प्रसन्नता होती. अपार धैर्य, अद्‌भूत शांती व मृत्युजयतेची भावना ओसंडून वाहत होती.

सायंकाळचे साडेपाच वाजले. सर्व लोकांना मागे जाऊन उभे राहण्यास सांगण्यात आले. सर्व दारे व खिडक्या उघडण्यास सांगण्यात आले. स्वामीजींनी विचारले, ''आज वार कोणता व कोणती तिथी आहे ?'' त्यांनी सांगितले - ''कृष्णपक्षाचा शेवट, अमावस्या व मंगळवार आहे.'' हे ऐकताच स्वामीजींनी सर्वत्र दृष्टीक्षेप टाकला आणि वेदमंत्रांचा जप सुरु केला. थोडा वेळ समाधिस्थ राहिले. नंतर डोळे उघडून शेवटची इच्छा पुढील शब्दात व्यक्त केली. ''**हे दयामय, हे सर्व शक्तिमान ईश्वर ! तेरी यही इच्छा है, सचमुच तेरी यही इच्छा है ! परमात्मदेव तेरी इच्छा पूर्ण हो ! तूने अच्छी लीला की !**'' या शब्दांचे उच्चारण करीत कुशीवर वळले. ब्रह्मर्षीने आपले प्राण ब्रह्मांडद्वाराने प्रणवनादासह बाहेर काढले. त्यांचा आत्मा अनंतात विलीन झाला. त्यांचे पार्थिव शरीर भूमातेवर राहिले. उपस्थित लोक ओक्साबोक्सी रडू लागले. आज एकीकडे दीपावली निमित्त सारे शहर दीपमाळांनी झगमगू लागले होते, तर इकडे आर्य धर्माचा प्रकाशस्त्रोत मालवला गेला.

आर्य भक्तांनी स्वामीजींच्या शवास सन्मानपूर्वक शहराच्या दक्षिण भागाकडे नेले. यासाठी विमानाच्या आकाराच्या शववहिकेचा वापर करण्यात आला. शववाहिकेस १६ जणांनी आपला खांदा दिला. शववाहिकेपुढे स्वामीजींचे शिष्य स्वामी आत्मानंद, गोपालगिरी व ब्रह्मचारी रामानंद हे मंत्रपाठ करीत चालले होते. विमानाच्या मागे असंख्य शोकाकुल आर्यपुरुष होते. त्यात प्रामुख्याने उत्तर भारतीय, मारवाडी, पंजाबी, बंगाली व महाराष्ट्रीय लोक होते. ही अंत्ययात्रा अजमेर शहराच्या दक्षिणेस असलेल्या मलूसर नावाच्या स्मशानात जाऊन पोचली. तेथे विधिवत् वेदी तयार करण्यात आली होती. त्या वेदीवर स्वामीजींचे भौतिक शरीर ठेवण्यात आले. यासाठी चंदन व पिंपळाची समिधा रचून चिता बनविण्यात आली होती. चार मन तूप, पाच शेर कापूर, एक शेर केशर आणि दोन तोळे केशर वापरण्यात आले. त्यानंतर स्वत: स्वामीजींनी तयार केलेल्या **'संस्कारविधी'** मध्ये सांगितल्याप्रमाणे स्वामी आत्मानंद व ब्रह्मचारी रामानंद यांनी आपल्या गुरुच्या चितेला मंत्रोच्चारपूर्वक तुपाच्या व सामुग्रीच्या आहुती देण्यात आल्या. हे सर्व आटोपल्यावर उपस्थित मंडळी स्नान उरकून घरी परतली. तेंव्हा संध्याकाळचे सहा वाजले होते.

भगवान् भास्कर आपले दैनिक कर्तव्य पार पाडून थकल्या भागल्या मनाने जगाचा निरोप घेऊन अस्तांचलाकडे चालला होता. त्याच वेळी या भूतलावर एक नवे युग निर्माण करणारा दृष्टा महात्मा मोक्षमार्गावर आरुढ झाला होता. त्यांची थोरवी मनाच्या कोपऱ्यात जपत शेकडो आर्य पुरुषांचा तो जमाव जड पावलांनी परत चालला होता. सर्वांच्या कानात महर्षी दयानंद सरस्वतींची शेवटची धीरगंभीर वाणी अजूनही वेदमंत्राप्रमाणे घुमत होती !

महर्षी दयानंदांच्या प्रवचनावर व त्यांच्या पांडित्यावर पं.गुरुदत्त फारच फिदा होते. परंतू ईश्वराच्या अस्तित्वावर त्यांचा मुळीच विश्वास नव्हता. एकदा ते स्वामीजींना म्हणाले होते - "गुरुवर ! आपल्या विद्वत्तेने मी फारच प्रभावित झालेलो आहे. आपली विद्वत्तापूर्ण भाषणे मला फारच आवडतात. आपले ईश्वराचे स्वरुप स्पष्ट करणारे सर्व तर्कही मला खूप आवडतात. असे असूनही माझा ईश्वराच्या अस्तित्वावर मुळीच विश्वास बसत नाही." तेंव्हा स्वामीजी म्हणाले होते की, "मी कुठे म्हणत आहे तू ईश्वराच्या अस्तित्वावर विश्वास ठेव म्हणून ? आपोआपच तुला अनुभवातून ईश्वराचे अस्तित्व जाणवेल." आणि योग कसा? स्वामीजी विषप्रयोगामुळे अत्यवस्थ असल्याची वार्ता पं.गुरुदत्तांना कळली. म्हणून ते भेटण्यासाठी अजमेरला आले होते आणि तो दिवस ही हाच म्हणजे स्वामीजींच्या मृत्यूचा होता. स्वामीजींना

www.thearyasamaj.org

मृत्यूच्या पाशामध्ये पाहून ते अत्यंत दु:खी झाले. स्वामीजींचे सारे शरीर विषाच्या प्रभावामुळे फोडांनी झाकाळून गेले होते.त्या अवस्थेतही स्वामीजी अत्यंत प्रसन्नचित्त होते. त्यांच्या चेहऱ्यावर वेदनांच्या कष्टाचा मासमूसही दिसत नव्हता. शरपंजरी पडलेल्या भीष्माचार्यांप्रमाणे स्वच्छेने प्राण सोडण्यापूर्वी जी गंभीर व शांत स्थिती पं.गुरुदत्तांनी पाहिली, त्यावरुन त्यांच्या मनात 'अत्यंत प्रतिकूल व कष्टदायक अवस्थेत एवढी प्रसन्नता एका वैश्विक महाशक्तीच्या आश्रयाशिवाय असणे शक्य नाही', असा त्यांचा ठाम विश्वास झाला. त्या क्षणापासून त्यांच्या हृदयाने आस्तिकतेचा स्वीकार केला व त्यांनी उर्वरित आयुष्य महर्षींच्या कार्यासाठीच समर्पित केले. आपल्या मूलभूत चिंतनाद्वारे पाश्चात्य विद्वानांच्या वेदांवरील आक्षेपाची समर्पक उत्तरे देत राहिले. त्यांच्या लिखाणात, उपदेशात व कार्यशैलीत आस्तिकतेची छाप स्पष्टपणे दिसून येते. पं.गुरुदत्त पंजाबचे एक अत्यंत प्रतिभाशाली युवक होते. त्यांनी इ.स.१८८५ व १८८६ मध्ये बी.ए. व एम.ए. (भौतिकशास्त्र) परीक्षा प्रथम श्रेणीत उत्तीर्ण केल्या होत्या. या परीक्षात ते पंजाब विद्यापीठात प्रथम आले होते. त्यांनी लिहिलेला, 'Terminology of the Vedas' हा ग्रंथ ऑक्सफर्ड विद्यापीठाच्या अभ्यासक्रमात लावला गेला होता.

स्वामीजी नि:स्पृह व निर्भयपणे बोलत, पण ते स्वार्थी मंडळींना पचनी पडत नसे. अशी मंडळी एकत्र आली व त्यांनी स्वामीजींना ठार मारण्याचा कट रचला. या कटाचे नेतृत्त्व महाराज जसवंत सिंहाची रखेल नन्ही भगतन हिने केले. तिच्या आहारी जसवंतसिंह इतके गेले होते की, ती राज्यकारभारात वाटेल तसा हस्तक्षेप करीत होती. स्वामीजींकडून केल्या जाणाऱ्या इस्लाम खंडनाने बिथरलेला मुसलमान समाजही या कटात सहभागी झाला.

दि.२९ सप्टेंबर १८८३ रोजी रात्री धौड मिश्र या स्वामीजींच्या स्वयंपाक्याने नेहमीप्रमाणे जे दूध स्वामीजींना दिले त्यात 'सोमल' विष घातलेले होते. ज्या महापुरुषाने साऱ्या जगाला अमृत देण्यात आपले सारे आयुष्य खर्ची घातले. त्याला त्याच जगाने विष घालावे ही केवढी कृतघ्नता ! केवढा दैवदुर्विलास !! तसे स्वामीजींना ठार करण्याचा अनेकदा प्रयत्न झाला होता, पण दि.२९ रोजी दिलेले विष महाभयंकर ठरले व वेळेवर न लक्षात आल्याने योगाद्वारे ते विष निष्प्रभ करता आले नाही.

स्वामी दयानंद सरस्वती यांच्या व्यक्तिमत्त्वामध्ये ज्ञान, करुणा आणि कर्म यांचा अद्भुत त्रिवेणी संगम झालेला होता. जगातील पंडितांनी फक्त ज्ञानयोगच स्वीकारला. आपल्या पांडित्यातच ते मशगूल

www.thearyasamaj.org

होऊन राहिले. सामान्य जनता आणि तिच्या समस्या यांच्याशी त्यांचा कधी साक्षात् संबंधच आला नाही. मात्र स्वामी दयानंदांच्या बाबतीत तिन्ही तत्वांचा (ज्ञान, करुणा व कर्म) मोठा मनोज्ञ संगम झाला होता. त्यामुळे विद्वानांच्या जगात त्यांच्या ज्ञानाचा दरारा पसरला, तर कर्मक्षेत्रात त्यांच्या अनुयायांनी अद्भूत कामगिरी करुन दाखविली. देशाच्या स्वातंत्र्यलढ्यातील त्यांची कर्तबगारी जेवढी दिव्यभव्य होती, तेवढीच दलित-पीडित व अनाथ लोकांच्या सेवेसाठी त्यांनी केलेले सुसंघटित कार्य हे आदर्शभूत ठरले. कारण त्याच्या मुळाशी कारुण्याची प्रेरणा होती. यामुळे स्वामीजींचे व्यक्तिमत्व व कार्य हे आपल्या वैशिष्ट्यांमुळे लक्षणीय ठरले.

स्वामीजींनी अनेक पुस्तके लिहिली. ती याप्रमाणे आहेत -'संध्या, भागवत खंडन, काशी शास्त्रार्थ, आर्याभिविनय, स्वामी नारायण मतखंडन, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधी, वेदांतिध्वान्त निवारण, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, ऋग्वेद भाष्य, यजुर्वेद भाष्य, वेद विरुद्ध मत-खंडन, सत्य-धर्म विचार, पंचमहायज्ञ विधि, आर्योद्देश्य रत्नमाला, व्यवहारभानू, संस्कृतवाक्यप्रबोध, गोकरुणानिधी, वेदांग प्रकाश, भ्रांति निवारण, भ्रमोच्छेदन,पंचमहायज्ञविधी, सत्यासत्य विवेक, जालंधर शास्त्रार्थ, हुगली शास्त्रार्थ, अष्टाध्यायी भाष्य, शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारण, अद्वैतमतखंडन, गौतम-अहल्या की कथा, सत्यासत्यविवेक इत्यादी !

स्वामी दयानंद निश्चितच एक महान संत होते. नीर-क्षीर विवेकी परमहंस होते. कवि शिरोमणी तुलसीदासांनी संतांची उपमा कापसाच्या रोपट्याशी केली आहे. जसे कापसाची पैदास होताच ते चरख्यात घातले जाते. नंतर सुत कातण्यासाठीच्या यंत्रात घातले जाते. नंतर त्याचे सूत बनते. नंतर त्याचे कापड विणले जाते. त्यानंतर धोबी त्यास घाटावर नेतात व पाण्यात धुवून काढतात. त्यास सुकवून शिंप्याकडे पाठविले जाते. शिंपी ठिकठिकाणी फाडाफाड करुन सुईने शिवून काढतात व त्याचे सुंदर अंगरखा, पायजमा आदिमध्ये रुपांतरण होते. त्याप्रमाणेच परमहंस दयानंद गृहत्याग, वडिलांच्या आदेशाने शिष्यांकडून पकडले जाणे, गुरु विरजानंद त्यांचेवर क्रोधित होऊन त्यांना दंड्याने बडवून काढणे, त्यानंतर उत्तराखंडात अनंत यातना, प्रचारक्षेत्रात पदार्पण, अनेकवेळा विषप्रयोग, राजा कर्णसिंहाकडून नग्न तलवारीचा प्रहार करण्याचा प्रयत्न, जोधपुरात घातक विष प्रयोग आदी ! इतके होऊनही आपल्या ध्येयापासून विचलित न होणे, लोकोद्धारासाठी दिव्य यज्ञात निरंतर शांतचित्त राहून आहुती देत राहणे.

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानंद केवळ स्वत:च सत्याचे पुजारी नव्हते,तर आपल्या अनुयायांनाही ते सत्याचे पुजारी बनवू इच्छित होते. म्हणूनच आर्यसमाजाच्या ४ थ्या नियमात ते नमूद करतात, **''सत्य के ग्रहण करने व असत्य को छोडने में सदैव उद्यत रहना चाहिए।''** व ५ व्या नियमात म्हणतात – **''सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।''**

संत पुरुष हे आदर्श व निरभिमानी, परंतू स्वाभिमानी देखील असतात. पुण्यात ते जेव्हा प्रचारार्थ गेले होते, तेंव्हा तेथील कांही द्वेषी लोकांनी एका माणसास दयानंदांसारखे कपडे घालून त्यांची गाढवावर मिरवणूक काढली. स्वामीजींना ही वार्ता कळली तेंव्हा स्वामीजी म्हणाले, ''ठीक ही तो है ! नकली दयानंद के साथ यही सलूक किया जाना चाहिए।''

अशी ही महान व्यक्ती, ज्यांचे प्राणोत्क्रमण दिवाळीत अमावस्येदिवशी झाले, जणू साऱ्या जगाला सातत्याने प्रकाश ज्ञानरुपी प्रकाश प्राप्त करण्याची प्रेरणा देण्यासाठीच या महान व्यक्तिमत्त्वास कोटी-कोटी प्रणाम !

* * *

– २६, 'यज्ञ', इंद्रप्रस्थ गृहनिर्माण सोसायटी, गजानन मंदिर परिसर, गारखेडा, औरंगाबाद

मो.९४२३१७८८०३

महाराष्ट्र-आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे आर्य समाज हादगावच्या सहकार्याने

पू.पिताश्री स्व.विठ्ठलराव बिराजदार (तांभाळकर) स्मृती

१) राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा २०१६

विषय:-म.दयानंदांचे शैक्षणिक विचार(सत्यार्थ प्रकाश-द्वितीय सम्मुलास)

रविवार दि.२७.११.२०१६ वेळ सकाळी ११ वा.

स्थळ :- आर्य समाज, हदगांव

१) स्पर्धेत केवळ माध्य. विद्यालयाच्या (इ.८,९,१०वी) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) स्पर्धेसाठी प्रत्येक विद्यालय किंवा आर्य समाजातर्फे ३-३ स्पर्धक पाठवावेत.

३) प्रत्येक स्पर्धकास भाषणासाठी (मराठी/हिंदी) ८(६+२) मिनिटे वेळ दिला जाईल.

४) प्रवेश शुल्क रु.५०/- भरून दि. २०.११.२०१६ पर्यंत स्पर्धेची नोंदणी करावी.

५) पारितोषिके १) रु.१५००, २) रु.११००, ३) रु.७७५, रु.१०० चे वैदिक साहित्य

ऋषीतुल्य व्यक्तिमत्वाची शंभरीकडे वाटचाल

– प्राचार्य भालचंद्र शिंदे

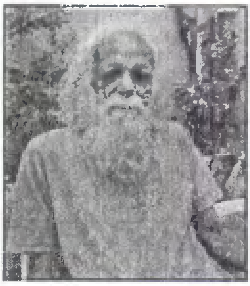

परवा २२ ऑक्टोबरला सकाळी 'वैदिक गर्जना' चे संपादक डॉ.नयनकुमार आचार्य यांना फोन केला असता आमचे श्रद्धास्थान, गुलबर्गा-बिदर-लातूर-उस्मानाबाद परिसरातील आर्यसमाजाचे मार्गदर्शक आणि असंख्य विद्यार्थी व तरुणांच्या सर्वथा कल्याणासाठी,हितासाठी आजन्म आयुष्य वेचणारे हितचिंतक हरिश्चंद्र गुरुजी-आताचे पू.स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती हे पुढच्या महिन्यात नोव्हेंबर २०१६ ला ९८ वर्षे पूर्ण करुन ९९ व्या वर्षात पदार्पण करीत असलेलं समजलं. बघता-बघता त्यांची शंभरीकडे वाटचाल चालू झालेली पाहून-ऐकून मन सुखावून गेलं. उस्मानाबाद जिल्ह्यातील उमरगा तालुक्यातील औराद एक छोटसं गाव. तिथे गुरुजी जन्मले. एका सामान्य कुटूंबात घरची आर्थिक परिस्थिती बेताची म्हणण्याऐवजी चिंताजनकच! कसला सांस्कृतिक वारसा नको, ज्ञानाची परंपरा नको की घराला विद्येचा स्पर्श नको, केवळ अंधार आणि अंधारच ! घरात व बाहेरही त्यात त्याचं शिक्षण कसबसं झालं. ते 'गुरुजी' झाले. गावातच शिकवू लागले. पण शिकतंच कोण ? एखादा सुग्रीव काळे, एखादा अण्णाराव पाटील, एखादा गुणवंत पाटील सोडला तर कुणाच्या अंगावरुनही गुरुजींचा ज्ञानाचा वारा गेल्याचं मला दिसत नाही. मी त्याच परिसरातील कदेरचा. रहिवासी. औरादात माझी विठा आत्या होती. त्या निमित्ताने मी औरादला जात असे. अशी त्यांची भेट झाली. सहवास घडला. आयुष्यच बदलून गेलं. त्यांनी सांगितलेली जीवनमूल्ये मी जीवनभर उराशी बाळगून आहे. जीवन चांगलं करण्यासाठी त्याचा उपयोग झाला आहे, अशी माझी श्रद्धा आहे. माझीच कशाला ? माझ्यासारख्या हजारोंची! त्यांचा हात माझ्या पाठीवरुन फिरला नसता तर मी गुराखीच झालो असतो.

.... तर औरादमध्ये गुरुजी लहान असतांना श्री पालापुरे यांच्या शेतात त्यांना **'सत्यार्थप्रकाश'** हाती पडला. त्याच वाचन, मनन, अध्ययन सुरु झालं. त्यांच्या मनावर वैदिक विचारांचा पगडा लहानपणापासूनच आहे. तो वरचेवर घट्ट-घट्ट होत गेला. वेद त्यांना फार प्रिय वाटत

www.thearyasamaj.org

सदोदित चारी वेदांवरच ते बोलतात. त्यांच्या भोवतीच चर्चा करतात. त्यांच्या लहानपणी आणखी एक क्रांती घडली. खेडं गाव. अडाणीपणा. चहूकडे अंधारच अंधार. अशी प्रतिकूल परिस्थिती. कुणाचं मार्गदर्शन नको. ज्ञानाचा पत्ता नको. विद्येचा वारा नको. अशा वेळी अशा परिस्थितीत गुरुजींनी आजन्म ब्रह्मचर्य व्रताचं पालन करण्याचा निर्णय घेतला व आज शंभरीकडे वाटचाल करतांनाही तो निभावून नेला. मी गुंजोटीला शाळेला असतांना '**ब्रह्मचर्य हेच जीवन**' जे पुस्तक हाती पडलं होतं. काही काळ या विचारानं मी भारुनही गेलो होतो. पण ब्रह्मचर्याचं पालन ही साधी गोष्ट नव्हे ! 'जावे त्याच्या वंशा तेंव्हा कळे!' त्याचं पालन करणारा हरिश्चंद्रासारखा लाखात एखादाच !

वैदिक विचारांना या तपस्वीपणाची किनार लाभली. छोट्या प्रमाणात, खेडेगावात कार्य सुरु झालं. गुणवंत पाटील, अण्णाराव पाटील, सुग्रीव काळे, शंकरराव मयाचारी यांची साथ मिळाली. कार्य विस्तार वाढला. उमरगा, लातूर, निलंगा, परळी, उस्मानाबाद, परभणी, औरंगाबाद ते कर्नाटकातील बिदर-गुलबर्गा असा व्याप वाढला. आर्य समाजी विचारांतून-प्रभावातून कार्य चालू झालं. यातला एक महत्वाचा विचार गुरुजींनी उचलला. आंतरजातीय विवाहाचा विचार त्यांनी जोरकसपणे मांडला. अनेक तरुणांना त्यांनी त्याचं महत्त्व समजावून सांगितलं. ते त्यांनी मानलं सुद्धा. भारताच्या एकात्मतेसाठी व अखंडतेसाठी त्याची आत्यंतिक गरज आहे.

समाजातला तरुण वर्ग गुरुजींनी आपल्या केंद्रस्थानी ठेवला. व्यसनाधीनता हा तरुणांचा मुख्य धर्म बनला आहे. त्यापासून परावृत्त करणे, चांगल्या विचारांची पेरणी करणे, त्यांना सुमार्गाला लावणे हे गुरुजींनी आपलं ध्येयच ठरवून टाकलं. त्यातून ज्ञानसंपन्न, चारित्र्यसंपन्न अशी पिढी तयार झाली. जी की आज राष्ट्रोध्दारार्थ झटते आहे. गुरुजींनी विवाह करुन स्वतःचा संसार केला नाही, परंतू अनेकांचे संसार उभे केले. चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु यांचा आदर्श तरुणांपुढे ठेवला. राष्ट्रभक्ती जागवली. व्यसनाधीन,चारित्र्यहीन, भ्रष्टाचारी समाजाला अशा तरुणांची गरज आहे. देशाला गरज आहे. देशभक्ती पेटविली. राष्ट्रभक्ती जागविली. 'भारत माझा देश आहे' हे ब्रीद तरुण मनावर ठसविलं. आपण आपल्या परीघाबाहेर कधी बघतच नाही. ऋषी दयानंदांनी समाजाचा विचार केला. राष्ट्राच्या कल्याणाचा विचार केला. मानवतावादी विचार मांडला. गुरुजींनीही तोच विचार आचरणात आणला. '**मानवता संस्कार शिबिर**' घेऊन या परिसरात मानवतेची ज्योत जागती ठेवली. गुरुजींचं हे योगदान निश्चितच अंतर्मुख करायला

www.thearyasamaj.org

लावणारं आहे.

हैद्राबाद मुक्ती स्वातंत्र्य आणि गुरुजी हे प्रकरण स्वतंत्रपणे लिहिण्यासारखं आहे. १९४७ ला भारत स्वतंत्र झाला. परंतु आम्हा निजामी राजवटीतल्या भारतीयांना मात्र ते स्वातंत्र्य एका वर्षाने म्हणजे १७ सप्टेंबर १९४८ ला मिळालं. त्याकरिता आर्य समाजाने प्रचंड लढा दिला. रझाकारांचा सर्वत्र धुमाकूळ चालू होता. अन्यायी, अत्याचारी राजवट उलथवून टाकण्यासाठी फार मोठा संघर्ष करावा लागला. त्यात गुरुजींचा सहभाग असणं साहजिक, स्वाभाविक होतं.

रझाकारांचा प्रमुख कासिम रझवी व त्यांचे पाशवी अत्याचार जगजाहीर आहेत. हैद्राबाद राज्यात मोठी विचित्र परिस्थिती होती. बहुसंख्य प्रजा हिंदू परंतू राजा मात्र अल्पसंख्य मुसलमान. हैद्राबादचा निजाम भारतीय स्वातंत्र्यात सामील व्हायला तयार नव्हता. त्याने डायरेक्ट युनोशी संपर्क ठेवला होता. हा इतिहास ताजा आहे. पंडित जवाहरलाल नेहरु या बाबतीत कठोर निर्णय घेण्यास कचरत होते. परंतू त्यावेळचे गृहमंत्री लोहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल यांनी कठोर निर्णय घेऊन निजामावर नळदुर्ग मार्गे हल्ला केला. पोलीस ॲक्शन झाली. अनेकाचं बलिदान झालं. निजामी राजवट भारतात विलीन झाली. आंध्रचे आठ जिल्हे (तेलगु भाषिक) मराठवाड्याचे पाच जिल्हे (मराठी भाषिक) व कर्नाटकाचे तीन जिल्हे (कन्नड भाषिक) अशी विभागणी झाली. या तिन्ही भाषिकांची धुरा आर्यसमाजाने वाहिली. स्वाभाविकच गुरुजींचा संचार चहुकडे राहिला आहे. त्याच हे योगदान आम्हाला कसं विसरता येईल ?

पोर्तुगिजांचं गोवा हे छोटसं राज्य, पण तेही निजामाप्रमाणे भारतात सामील व्हायला नकार देत होतं. नाईलाजाने तिथेही सरदार पटेलांना ॲक्शन घ्यावी लागली. गोवा भारतात विलीन झाला. या मोठ्याच्या स्वातंत्र्य लढ्यातसुद्धा ३०-४० स्वातंत्र्य सैनिकांना घेऊन गुरुजी सामील झाले होते. त्यांच्या त्यागानं, हजारो स्वातंत्र्य सैनिकांच्या, सेनानींच्या बलिदानानं मिळालेलं स्वातंत्र्य अबाधित राहावं, असं मनोमन वाटतं. परंतू देशभक्ती, राष्ट्रप्रेम हे शब्द आमच्या जीवनातून पळून गेलेले आहेत. त्यांची जागा जातीयता, संकुचितता यांनी घेतलेली दिसते.

प्रत्येक जातीचा मोर्चा निघतो आहे. घटना पायदळी तुडविली जाते आहे. मग तिचं पावित्र्य कुठे ? हे कुणाच्या गावीसुद्धा नाही. आमच्या लहानपणी गुरुजी सांगायचे रामप्रसाद बिस्मीलची गोष्ट. चंद्रशेखर आजाद, राजगुरु यांच्या बलिदानाच्या गोष्टी आणि आता जातीसाठी माती खाणारी माणसं. लाखोंच्या संख्येनं रस्त्यावर येऊन, ऊर बडवून सांगत आहेत. आम्हाला

www.thearyasamaj.org

आरक्षण(रिझर्वेशन) पाटि[illegible] आरक्षणाच्या 'पांगुळगाड्यानं' अ[illegible] प्रगती होत नाही, असं ज्येष्ठ विच[illegible] रा.ना.चव्हाण म्हणत असतं. गु[illegible]र्या, मारवाडी, शेणवी माणूस रिझर्वे[illegible] शिवाय प्रगती करतो.संकुचिततेनं [illegible]क झालेला माणूस कुठे आणि हरिश्चंद्र गुरुजींसारखी त्यागी, तपस्वी, ऋषितुल्य माणसे कुठे? सध्याच्या संकुचित वातावरणाच्या पार्श्वभूमीवर या स्वातंत्र्यवीराचं बलिदान उठून दिसतं, हीच एक समाधानाची गोष्ट. हीच शिकवण त्यांनी आम्हाला दिली. अनेक विचारवंत, ज्ञानवंत, बुद्धीवंत, संघटक, विद्यार्थी घडविले. राष्ट्राची उभारणी केली. राष्ट्र बांधावं लागतं, घर बांधल्यासारखं! घर दगड-विटांनी बांधलं जात. राष्ट्रबांधणीसाठी त्याग, तपस्या, देशभक्ती, राष्ट्रभक्ती यांची आवश्यकता असते. आमच्या स्वामीजी-हरिश्चंद्र गुरुजींनी ती आम्हाला दिली. आम्ही धन्य झालो. **'जगाच्या कल्याणा संतांच्या विभूती । देह कष्टविती परोपकारे ।।'** हेच खरं ! आज गुरुजी ९८ वर्षांचे झाले. त्यांची प्रकृती घट्टमुट्ट आहे. अजूनही भरपूर प्रवास करतात. सर्वांशी संपर्क ठेवतात. मानवी मूल्ये पेरत असतात. त्यांची हे पेरणी, नांगरणी अशीच चालू राहो. त्यांच्या हातून असंच मानवतेचं कार्य होवो, त्यांना शंभराहून अधिक आयुष्य लाभो, जेणेकरुन देशातील असंख्य या तरुणांना या तेजोमय दीपस्तंभाची प्रकाशप्रेरणा सदोदित मिळत राहिल आणि त्यातूनच वेदज्ञानाधिष्ठीत समाज व राष्ट्राची नवनिर्मिती होण्यास मदत मिळेल, ही मनोकामना !

(लेखक कर्नाटक राज्य साहित्य परिषदेचे अध्यक्ष आहेत)

***

- १०-३/८६, 'संतमुद्रा',
एन.व्ही.लेआऊट,
कलबुरगी (गुलबर्गा)

मृत्यु के संदर्भ में क्या कहते है डॉ.धर्मवीरजी ?

मृत्यु के विषय में धर्मवीरजी ने एकबार कहा था - "यह जो आत्मा है, जिसे मन व इंद्रियों के अभाव में पहचाना नही जा सकता। यह जीवात्मा इस शरीर में है या नहीं, उपस्थित है या नहीं है, यहाँ बैठा है, या चला गया है, कैसे पता लगेगा ? जो वस्तुएँ इन्द्र की (जीवात्मा की)है, वही इंद्रियों को देख कर हमें मालूम होता हैं कि वह है या नही है ? इसलिए इसकी पहचान बताई है-**'इद्रस्य लिङ्गम् इंद्रियम्।'** जब तक इनसे क्रथा नही होगी, तब तक इसका होना 'होना' नही होगा । और जिस भव्य यह सक्रिय नही रहेंगे, उस क्षण वह नही होगा ।"

www.thearyasamaj.org

वार्ताविशेष

परळीत दसरादिनी सांख्यायनांचे व्याख्यान

'मन व इंद्रियजनित दुर्गुणांवर आत्मप्रणित सद्गुणांचा विजय म्हणजे खऱ्या अर्थाने विजयादशमी दसरा पर्वाची सार्थकता होय', असे विचार वेदप्रचारयात्री श्री स्वामी सांख्यायनजी यांनी व्यक्त केले. परळी येथील आर्य समाजात दसरा पर्व साजरा करण्यात आला. त्यावेळी आयोजित आध्यात्मिक व्याख्यान सत्रात प्रमुख व्याख्याते म्हणून ते बोलत होते. ते म्हणाले- 'सृष्टीव्यवस्था ही जीवांच्या कल्याणाकरिता परमात्म्यांद्वारे संचालित नियमबद्ध शृखला आहे. त्या नियमांनुसार चालत जाऊन आत्मज्ञान मिळविणे, हेच मानवाचे अंतिम ध्येय आहे. याकरिता इंद्रियजन्य विकारांवर विजय मिळविला पाहिजे.'

प्रारंभी नयनकुमार आचार्य यांच्या पौरोहित्याखाली यज्ञ संपन्न झाला. नंतर कोषाध्यक्ष श्री प्रभुलालजी गोहिल यांनी भजन सादर केले. यावेळी संस्थेचे मंत्री उग्रसेन राठौर, माजी सैनिक श्री अमृतमुनिजी, आर्यमुनिजी, गोवर्धन चाटे, जयपाल लाहोटी, रविंद राठौर, जयकिशोर दोडिया, रंगनाथ तिवार आदी उपस्थित होते.

तामसा आर्य समाज भवनाचे १४ ला उद्घाटन

हदगांव तालुक्यातील तामसा गावातील आर्य समाज मंदिराच्या नवनिर्मित इमारतीचे उद्घाटन येत्या १४ नोव्हेंबर रोजी विविध विद्वान व मान्यवरांच्या उपस्थितीत होत आहे. जवळपास ८ लाख रुपये खर्चून ८०X ६० या जागेत बांधण्यात आलेली आर्य समाजाची नवी वास्तू उद्घाटनाच्या प्रतीक्षेत आहे. तपस्वी संन्यासी व प्रांतीय सभेचे संरक्षक स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती यांच्या हस्ते व मंत्री श्री माधवराव देशपांडे, वैदिक विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री, भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंह चौहान व परिसरातील आर्यजनांच्या प्रमुख उपस्थितीत या नव्या वास्तूचे उद्घाटन होईल. यानिमित्त दि.१३ व १४ नोव्हेंबर रोजी सकाळी, दुपारी व रात्री वरील विद्वानांचे व्याख्यान व भजनोपदेश असे पं.राजवीरजी शास्त्री यांची व्याख्याने तर सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान यांच्या भजनोपदेश हे कार्यक्रम संपन्न होतील. तरी या आर्य समाज इमारतीच्या उद्घाटन कार्यक्रमास आर्यजनांनी उपस्थित राहावे असे आवाहन तामसा येथील आर्यसमाजाचे संरक्षक गोविंद गणपतराव बंडेवार, प्रधान विश्वंभर दिगंबर कोठळे, मंत्री संभाजी दत्तराव कल्याणे व पदाधिकाऱ्यांनी केले आहे.

www.thearyasamaj.org

नागपूरच्या गुरुकुलाचा १२, १३ला वार्षिकोत्सव

नागपुरपासून जवळ असलेल्या दोन वर्षांपूर्वी स्थापन झालेल्या '**कान्हा वैदिक गुरुकुल**' महाविद्यालयाचा द्वितीय वार्षिकोत्सव दि.१२ व १३ नोव्हेंबरला विविध कार्यक्रमांनी संपन्न होत आहे. या निमित्त वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन, विद्यार्थ्यांचे बौद्धिक ज्ञान प्रदर्शन आदी कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले आहे.

आर्य जगताचे संन्यासी, विद्वान व भजनोपकांना या कार्यक्रमात आमंत्रित करण्यात आले असून त्यांच्या हस्ते तासके कुटूंबातर्फे माता लक्ष्मीबाई तासके यांच्या स्मरणार्थ बांधण्यात आलेल्या छात्रावास भवनाचे उद्घाटन होणार आहे. तरी या वार्षिक उत्सवात सर्व आर्य जनता, माता-बंधू भगिनी व कार्यकर्त्यांनी सहभागी व्हावे, असे आवाहन गुरुकुलाचे आचार्य ब्र.धर्मवीरजी यांनी केले आहे.

केहलारी गुरुकुलाचा महोत्सव १२, १३ व १४ ला

मध्यप्रदेशातील खंडवा शहरापासून कांही कि.मी.अंतरावर 'जावर-पुनासा' मार्गावर गेल्या १० वर्षांपासून सुरु असलेल्या '**वेदयोग गुरुकुल**' आश्रमाचा दहावा वार्षिक उत्सव येत्या १२, १३ व १४ नोव्हेंबर रोजी पार पडत आहे.

दशकपूर्ती वर्षानिमित्त या गुरुकुलाचा यावर्षीचा होणारा हा वार्षिकोत्सव भव्य स्वरुपात आयोजित केला आहे. यानिमित्त गायत्री महायज्ञ, आरोग्य रक्षण व आर्यवीर दल शिबिर, राष्ट्रीय-सामाजिक-आध्यात्मिक अशी विविध विषयावरील संमेलने आदी समारंभ पार पडतील. आर्य विद्वानांबरोबरच परिसरातील खासदार, आमदार व विविध संस्थांच्या पदाधिकाऱ्यांना ही आमंत्रित करण्यात आले आहे. स्वास्थ्य रक्षा शिबिरांसाठी मार्गदर्शक म्हणून ११६ वर्षांचे योगी व तपस्वी संन्यासी स्वामी सर्वांनदजी सरस्वती सहभागी होत आहेत. तरी या गुरुकुल उत्सव समारंभास आर्यजनांनी उपस्थित राहावे, असे आवाहन गुरुकुलांचे आचार्य श्री सर्वेश शास्त्री यांनी केले आहे.

महर्षि दयानंदांचे उद्दिष्ट- जे भूत, वर्तमान व भविष्य या तिन्ही काळात सर्वांना रुपाने मानण्यास योग्य आहे, तेच माझे मंतव्य आहे, असे मी समजतो. एखादी नवीन कल्पना अथवा मतमतांतर प्रस्थापित करणे हा माझा हेतू मुळीच नाही. परंतु जे सत्य आहे, ते मानणे व मानावयास लावणे आणि जे असत्य आहे, ते सोडणे व सोडावयास लावणे हे माझे उद्दिष्ट आहे.

www.thearyasamaj.org

आर्य समाजामुळे गुंजोटीचा दसरा महोत्सव ऐतिहासिक

ज्येष्ठ विचारवंत डॉ.वाघमारे यांचे गौरवोद्गार

हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात गुंजोटी गावचे महत्त्व वैशिष्ट्यपूर्ण असून या गावच्या क्रांतिकारी आर्यवीरांनी आपले शौर्य गाजवून इतिहासात मोठी कामगिरी बजावली आहे. येथील आर्य समाजामुळेच दरवर्षी साजरा केला जाणारा दसरा महोत्सव प्रेरणादायी ठरला आहे. अन्याय व अत्याचारावर विजय मिळविणारा राष्ट्रभक्तीचा आदर्श येथील क्रांतिवीरांपासून घ्यावा, असे प्रतिपादन ज्येष्ठ विचारवंत व माजी खासदार डॉ.जनार्दनराव वाघमारे यांनी केले.

गुंजोटी येथील सार्वजनिक दसरा महोत्सवात डॉ.वाघमारे प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी आर्य समाजाचे प्रधान पं.प्रियदत्तजी शास्त्री हे होते. श्री वाघमारे यांनी आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात आर्य समाजाच्या कार्याचा गौरव करीत दसरा महोत्सवाचे महत्त्व विशद केले. ते म्हणाले-'गुंजोटीच्या दसरा मेळाव्याची परंपरा फारच जुनी आहे. त्याचा आदर्श राज्यातील इतर गावांनीही घ्यावा. या सणाचे विशेष पावित्र्य असून सत्याचा असत्यावर झालेला विजयोत्सव समाजाला नैतिक दृष्ट्या विकसित करणारा आहे. स्वामी दयानंदांनी माणसाला माणूसकीचा वस्तुपाठ शिकविला. स्वामीजींनी कथन केलेल्या मानव धर्मामुळे जातीभेदाच्या भिंती नाहीशा होऊन आदर्श समाज उदयास येऊ शकतो', असेही यावेळी ते म्हणाले. अध्यक्षीय समारोपात पं.प्रियदत्तजी शास्त्री यांनी आर्यसमाजाच्या माध्यमाने पुन्हा एकदा सर्वांनी एकत्र येऊन गाव व समाजाला नैतिकदृष्ट्या उन्नत करावे, असे आवाहन केले.

कार्यक्रमास प्रा.ओमप्रकाश होळीकर, हरिभाऊ जवळगे, डॉ.भास्करराव पाटील, दिनकरराव देशपांडे, सरपंच शंकरराव पाटील, उपसरपंच शिवाजीराव गायकवाड, विलास व्हटकर, सहदेव गायकवाड, दत्तात्रय कटकधोंड, पं.राजवीर शास्त्री, विश्वनाथ कदेरे, प्रा.संतोष दुधभाते, बबन ऐनले आदी उपस्थित होते. यावेळी सेवानिवृत्त ऑनररी कॅप्टन सूर्यकांत जाधव व विश्वनाथ महाजन यांचा सत्कार करण्यात आला. प्रारंभी आर्यसमाजापासून विजय मैदानापर्यंत दसरा मिरवणूक निघाली. प्रास्ताविक म्हाळप्पा दुधभाते, सुत्रसंचालन गुंडु दुधभाते तर आभार प्रदर्शन विष्णू खंडागळे यांनी केले. सर्वश्री विलास पांचाळ, सत्यप्रकाश शिंदे, नारायण बेळंबकर आदींनी कार्यक्रमाच्या यशस्वीतेसाठी प्रयत्न केले.

www.thearyasamaj.org

शोकवार्ता

स्वातंत्र्यसैनिक पत्नी केरुरे यांचे निधन

परळी येथील सामाजिक कार्यकर्त्या व हैद्राबाद स्वातंत्र्यसंग्रामातील सहभागी स्वा.सै.दिवंगत श्री एकनाथराव केरुरे यांच्या पत्नी श्रीमती प्रभावती केरुरे यांचे दि.११ ऑक्टोबर रोजी वृद्धापकाळाने दु:खद निधन झाले. त्या ८० वर्षे वयाच्या होत्या.

त्यांच्या मागे विविध प्रशासकीय क्षेत्रात कार्यरत चार मुले, एक कन्या, जावई, सुना व नातू-नाती असा परिवार आहे. श्रीमती केरुरे अत्यंत मनमिळावू, प्रेमळ व परोपकारी स्वभावाच्या होत्या. सर्वांच्या मदतीला धावून जाणाऱ्या श्रीमती केरुरेबाईंनी अनेकांना अडीअडचणीत मोलाची मदत केली. त्या सेवाभावी व दानशूर सद्वृत्तीच्या होत्या. आपले दिवंगत पतिदेव स्वा.सै.एकनाथरावजींच्या स्मरणार्थ स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमात दोन लाख रुपये खर्चून त्यांनी एक अतिथी कक्ष बांधून दिले. अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितीत त्यांनी कुटुंबाचे पालनपोषण केले व सर्व मुलांना उच्चविद्याविभूषित बनविले.

हैद्राबाद मुक्ती लढा व गोवा मुक्ती आंदोलनात त्यांचे पति श्री एकनाथरावजींनी भाग घेतला होता. ते शासनाचे ताम्रपत्रधारक स्वातंत्र्य सैनिक होते. आदर्श पत्नी, आदर्श माता व एक सामाजिक कार्यकर्त्री म्हणून श्रीमती केरुरे यांनी समाजासमोर प्रेरक प्रतिमा निर्माण केली. आपल्या मुला-मुलींबरोबरच इतर विद्यार्थ्यांवर केरुरे दांपत्याने कृपाछत्र धरले. त्यांचे ज्येष्ठ सुपुत्र शिवाजी केरुरे हे महाराष्ट्र ग्रामीण बँकेच्या विभागीय मुख्य अधिकारी पदावरुन निवृत्त झाले. द्वितीय सुपुत्र श्री यशवंत केरुरे सध्या राज्याचे कामगार आयुक्त आहेत. ते उस्मानाबादला कांही वर्षे जि.प.मुख्याधिकारी होते. तिसरे पुत्र अभिमन्यू हे राज्याच्या फुड अँड ड्रग विभागाचे सहाय्यक आयुक्त आहेत. तर चौथे सुपुत्र तानाजी हे नाशिक येथे म.रा.वि.मं.चे सहा.कार्य.अभियंता आहेत. तसेच सुनबाई डॉ.चेतना तानाजी केरुरे या नाशिक म.न.पा.च्या सहाय्यक आयुक्त आहेत.

श्रीमती प्रभावतीबाईंच्या पार्थिव देहावर परळी येथील स्मशानभूमीवर पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्य संस्कार करण्यात आले. वैदिक पंडित सर्वश्री प्रशांतकुमार शास्त्री, नयनकुमार आचार्य, अरुण चव्हाण, वीरेंद्र शास्त्री, नरेश शास्त्री, आर्य मुनिजी व गुरुकुलाच्या ब्रह्मचाऱ्यांनी हा अंत्यसंस्कार संपन्न केला.

* * *

www.thearyasamaj.org

सोपानराव गोरे यांचे आकस्मिक निधन

आर्य समाज, येलमवाडी(ता.निलंगा) चे मंत्री श्री सोपानराव गुंडाजीराव गोरे (पेठकर) यांचे शुक्रवार दि.२१ ऑक्टोबर रोजी आकस्मिक दुःखद निधन झाले. मृत्यूसमयी ते ७० वर्षे वयाचे होते. त्यांचे मागे पत्नी सौ.नागीनबाई व सौ.द्वारकाबाई, मुलगी सौ.अनिता लंगोटे, दोन मुले गणेश व बाळासाहेब नातवंडे असा परिवार आहे.

श्री गोरे हे आर्य समाजाचे सक्रिय कार्यकर्ते म्हणून ओळखले जात. सभेचे अंतरंग सदस्य श्री विजयकुमार कानडे यांच्या सान्निध्यामुळे श्री गोरे वैदिक विचारांकडे वळले. महाराष्ट्र विद्यालय निलंगा येथून ७ वर्षांपूर्वी ते निवृत्त झाले होते.

सभेची आर्य दिनदर्शिका वितरण करण्याच्या कामी त्यांनी मोलाची भूमिका बजावली होती. आपले सुपुत्र चि.गणेशकुमार यांना वेद व संस्कृत शिकण्यासाठी गुरुकुल पौंधा (डेहराडून) येथे पाठविले. सध्या ते चापोलीच्या महाविद्यालयात संस्कृत प्राध्यापक म्हणून कार्यरत आहेत. आपल्या श्रीदेवी या नातीस कन्या गुरुकुल डेहराडून येथे पाठवून कन्यांना संस्कृत शिक्षणास प्रोत्साहन दिले. दिवंगत श्री गोरे यांच्या पार्थिवावर अत्यंत शोकाकूल वातावरणात वैदिक पध्दतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. आर्य समाज निलंगाचे सदस्य ओमप्रकाश वाघमारे, विजयकुमार कानडे, आचार्य सत्येंद्रजी, सोममुनिजी आदींनी हा अंत्यविधी पार पाडला.

पं.गणेशदेव आर्य यांना मातृशोक

वैदिक विद्वान् व सध्या बीदर येथे वास्तव्यास असलेले श्री पं.गणेशदेवजी आर्य यांच्या मातु:श्री श्रीमती इराबाई लक्ष्मणराव बासरे(आर्य) यांचे शुक्रवार दि.२८ ऑक्टोबर २०१६ रोजी स.९.३० वा. च्या सुमारास अल्पशा आजाराने आकस्मिक निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ८६ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्यामागे पुत्र श्री गणेशदेव स्नुषा सौ.ऊषादेवी व नातू-नाती असा परिवार आहे.

श्रीमती इराबाई या संघर्षशील, परिश्रमी व धाडसी वृत्तीच्या होत्या. त्यांचा प्रेमळ स्वभाव भेटणाऱ्या प्रत्येक व्यक्तीला मोहून घेत असे. त्यांचे पति श्री लक्ष्मणराव बासरे

www.thearyasamaj.org

हे कट्टर वैदिक धर्मी व वैराग्यवृत्तीचे होते. त्यामुळे घराची संपूर्ण जबाबदारी मोठ्या धैर्याने वहन करीत त्यांनी आपली कर्तव्ये पार पाडली. आदर व सेवाभाव त्यांच्या रोमारोमात भरलेला होता. नम्रता हा त्यांचा स्थायी स्वभाव होता. पुत्र श्री गणेशदेवजींच्या नवनिर्मितीत या मातेने सर्वाधिक कष्टाचे जीणे अंगिकारुन त्यांनी कुटुंबास मोठे बळ दिले. स्नुषा सौ.ऊषादेवी यांना आईपेक्षाही मोठी माया देऊन घरात कोणतीही ऊणीव भासू दिली नाही. अल्पशिक्षित असूनही अंधश्रद्धा, जातिभेद, नानाविध अनिष्ट रुढींचा विरोध करीत एक ईश्वर, एक मानव धर्म आणि आर्य संस्कृती यांचा त्यांनी पूर्णपणे अंगिकार केला होता.

दिवंगत श्रीमती इराबाईंच्या पार्थिवावर बीदर येथे पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी परिसरातील आर्य कार्यकर्ते व मान्यवर उपस्थित होते.

वरील सर्व दिवंगत आत्म्यांना प्रांतीय सभा व राज्यातील आर्य समाजांतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली ! सर्व आर्यजन दिवंगतांच्या दुःखात सहभागी आहेत.

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे आर्य समाज सोलापूरच्या सहकार्याने

सौ.कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले(आनंदमुनिजी) यांच्या गौरवार्थ

राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा २०१६

विषय : म.दयानंदप्रतिपादित ईश्वराचे स्वरुप

(सत्यार्थ प्रकाश-प्रथम सम्मुलास)

रविवार दि.१८.१२.२०१६ वेळ स.११ वा.

स्थळ :- आर्य समाज, सोलापूर

१) स्पर्धेत ११वी ते पदवी वर्गातील महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
२) प्रत्येक महाविद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.
३) प्रत्येक स्पर्धकास भाषणासाठी (मराठी/हिंदी) ८(६+२) मिनिटे वेळ दिला जाईल.
४) प्रवेश शुल्क रु.५०/- भरून दि. १०.१२.२०१६ पर्यंत स्पर्धेची नोंदणी करावी.
५) पारितोषिके १) रु.२०००, २) रु.१५००, ३) रु.१०००, रु.१०० चे वैदिक साहित्य

www.thearyasamaj.org

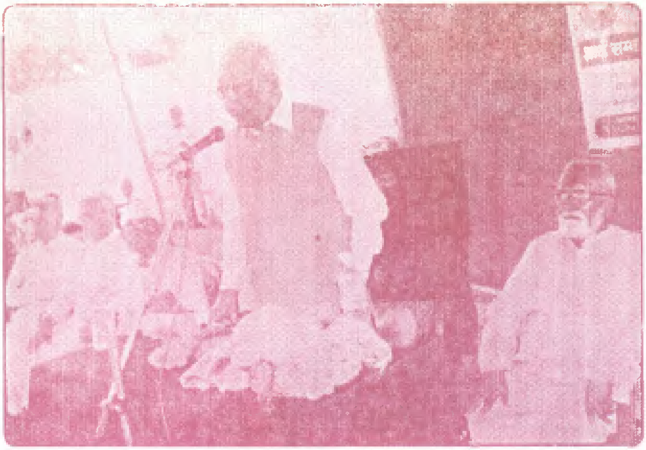

गुंजोटी में आर्य समाज द्वारा आयोजित दशहरा महोत्सव के अवसर पर मार्गदर्शन करते हुए प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ.जे.एम. वाघमारे (पूर्व सांसद), साथ में हैं प्रो.होलीकर, जवळगे, दिनकरराव देशपांडे, आदि।

प्रान्तीय सभा के नवनियुक्त शुद्धि संस्कार प्रमुख श्री संतोष आर्य का जालना में अभिनंदन करते हुए राज्य के जलापूर्ति एवम् स्वच्छता मंत्री श्री बबनरावजी लोणीकर। साथ में हैं अन्य मान्यवर।

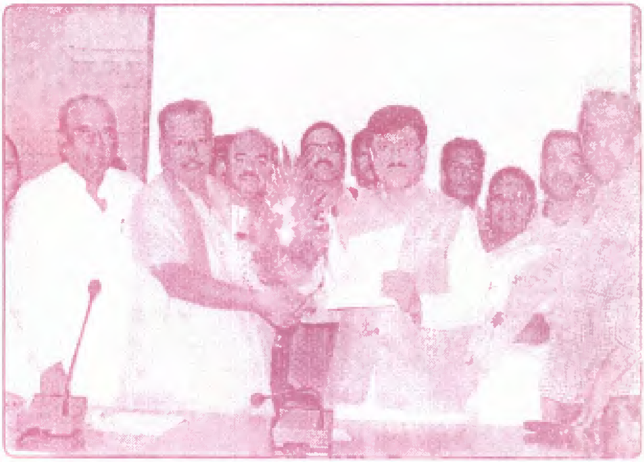

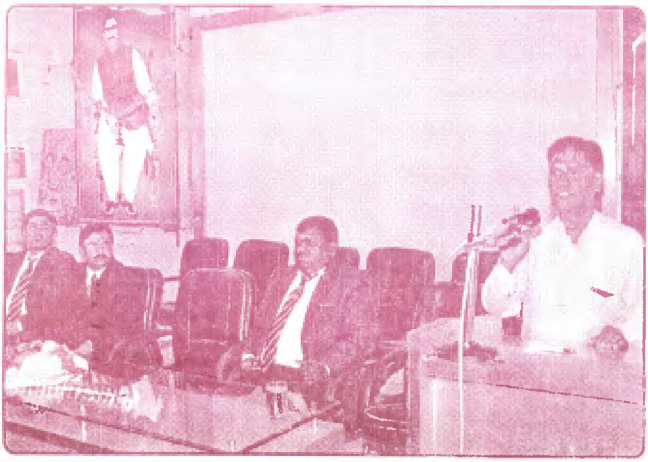

परली के वैद्यनाथ महाविद्यालय में आयोजित हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम दिवस पर व्याख्यान देते हुए प्रा.डॉ.चंद्रशेखर लोखंडे । मंच पर हैं प्राचार्य, उपप्राचार्य आदि।

www.thearyasamaj.org

REG.No. MAHBIL/2007/7493 ★ Postal No. L/Beed/18/2015-17

सेवा में,

श्री ....

प्रेषक -

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज, परली वैजनाथ.

पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्रदेश में आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्पती

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य

(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या

(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)